thearyasamaj.org

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-कार्तिक-मार्गशीर्ष संवत् 2071
नवम्बर 2014

ओ३म्

अंक 112, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

thearyasamaj.org

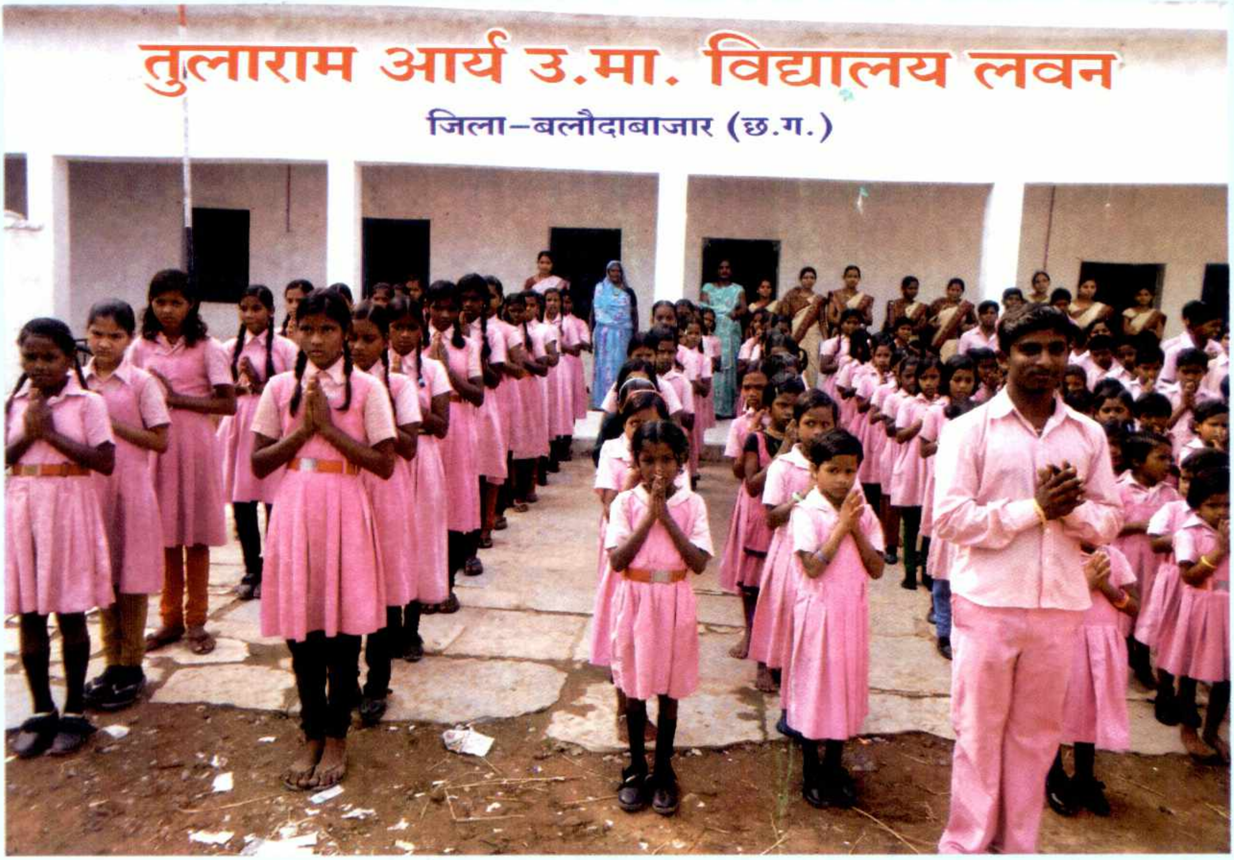

thearyasamaj.org

वर्ष - १०, अंक ५ ओ३म् मास/सन् - नवम्बर - २०१४

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् - २०७१
सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,११५
दयानन्दाब्द - १९१

श्रुतिप्रणीत-सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त-दीप्त वेद-सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सभ्रसभ्रकम्,
सभाग्निदूत-पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रवंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री अवनीभूषण पुरंग
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. ९८९३०६३९६०)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबंधक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

- कार्यालय पता -
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१ ००१
फोन : (०७८८)२३२२२२५, ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

विषय - सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : दिव्य सोमरस के पान का चमत्कार	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : आखिर क्या था - स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	आर्यसमाज और विश्वशान्ति	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	०८
४.	नेताओं का भंड़ाफोड़ काफी नहीं	डॉ. वेदप्रताप वैदिक	०९
५.	"सच्ची आध्यात्मिकता"	मनमोहन कुमार आर्य	११
६.	आर्यवीर दल की स्थापना तथा उसके कार्यों का इतिहास	खुशहालचन्द्र आर्य	१५
७.	जीव अमर है तो हत्या या आत्महत्या, पाप अपराध क्यों है ?	इन्द्रजीत देव	१८
८.	योग का महत्व	स्वामी सत्यानन्द सरस्वती	२०
९.	प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्रायः लोगों को लाभ क्यों नहीं होता ?	आचार्य आर्य नरेश	२२
१०.	वेद की विशेषताएँ	स्वामी शान्तानन्द सरस्वती	२४
११.	विभिन्न बिमारियों का इलाज - ओ३म् ध्वनि से सम्भव	प्रो. सत्येन्द्र शास्त्री	२५
१२.	प्रेरक था महात्मा आनन्द स्वामी का व्यक्तित्व	इन्टरनेट से संकलित	२७
१३.	जयन्ती : देवतास्वरुप भाई परमानन्द	राजेन्द्र जिज्ञासु	२९
१४.	जयन्ती : स्वामी दर्शनानन्द	डॉ. अशोक आर्य	३०
१३.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिन्टर्स, मॉडल टाऊन भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।

thearyasamaj.org

वेद वेदामृत

दिव्य सोमरस के पान का चमत्कार

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

अयं मे पीत उदियर्ति वाचम्, अयं मनीषामुशतीमजीगः।
अयं षडुर्वीरमिमीत धीरो, न याभ्यो भुवनं कच्चनारे॥ ऋग्. ६.४७.३

ऋषिः **गर्गः भारद्वाजः**। देवता **सोमः**। छन्दः **त्रिष्टुप्**।

● **(पीतः)** पान किया हुआ **(अयं)** यह सोम-रस **(मे)** मेरी **(वाचं)** वाणी को **(उदियर्ति)** उच्च प्रेरणा दे रहा है। **(अयं)** इसने **(उशतीं)** (जगत के हित की) कामना करने वाली **(मनीषां)** बुद्धि को **(अजीगः)** जगा दिया है। **(धीरः)** बुद्धिप्रद (इस सोम-रस) ने **(षट्)** छह **(उर्वीः)** विस्तीर्ण दिशाओं को **(अमिमीत)** (मेरे अन्दर ही) रचित कर दिया है, **(याभ्यः)** जिनसे **(कच्चन)** कोई भी **(भुवनं)** भुवन **(आरे)** दूर **(न)** नहीं (है)।

● **प**रब्रह्मा रुप सोम से प्रस्तुत होने वाले ब्रह्मानन्द रुप सोम-रस का मैने आज पान किया है। अपने अन्तःकरण में ध्यान रुप सिल बट्टों से पीस-पीसकर इस रस को मैंने अपने हृदय की प्याली में निचोड़ा है, जिसे पीकर मेरे आत्मा, मन, बुद्धि, प्राण, ज्ञानेन्द्रियाँ सब अनुभव कर रही है कि मेरे अंग-अंग में किसी दिव्य शक्ति का स्रोत फूट पड़ा है। मेरे अन्दर शीतल रस की स्रोतस्विनी प्रवाहित हो रही है, जिसकी तरंगों में क्रीड़ा करता हुआ मेरा मन और आत्मा रोमांचित हो गया है। पान किये हुए सोम-रस ने मेरी वाणी को प्रेरित कर दिया है। जो वाणी अशक्त, निष्क्रिय, निर्जीव, प्रसुप्त-सी थी, उसे आज अन्तःप्रेरणा मिल गई है। मैं बाहर से मूक बना हुआ अन्दर-अन्दर ही किसी ऊंचे संगीत के बोल बोल रहा हूँ। मैं अन्दर-ही-अन्दर प्रभु गरिमा के गान गा रहा हूँ। और अब देखों, वह मेरी अन्तर्वाणी बाहर भी गूंजने लगी है। मेरे रचे प्रभु-भक्ति, उद्‌बोधन और जागृति के गान जिह्वा द्वारा बाहर भी मुखरित हो रहे हैं, जिन्हें सुनकर धरती की आत्मा तृप्त हो रही है।

सोम-पान से आज मेरी लोक-मंगल की कामना करने वाली मनीषा भी स्फुरित हो उठी है। मेरे मन और बुद्धि संकुचित क्षेत्र से ऊपर उठकर असीम में पहुंच गये हैं, जहां कल्याण ही कल्याण की भावना है। मैं ऐसा अनुभव कर रहा हूँ कि बाहर की छहों विस्तीर्ण दिशाएँ मेरे अन्दर समा गई है जिनसे दूर कुछ भी नहीं रहा है। सब जगत् मेरे अन्दर है, मैं सबका हूँ, सब मेरे हैं। मैं चाहता हूँ कि दिव्य सोम-रस की यह मस्ती मेरे आत्मा का अभिन्न अंग बन जाए, मेरे अन्दर स्थायी हो जाए। हे आनन्दमय सोम प्रभु! तुम्हारी ही कृपा से यह संभव है। हे रसमय! अपने रस से सदा मुझे आप्लुत करते रहो।

संस्कृतार्थ :- १. उत् ऋ गतौ, जुहोत्यादि। २. वश कान्तौ। ३. अजीगः जागरयति (द.भा.ऋग. ५,६५.१)। ४. धियं राति ददाति इति धीरः। धी रा दाने, कः प्रत्ययः।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

आखिर क्या था स्वामी दयानन्द का शिक्षा दर्शन

इस युग के अद्वितीय महापुरुष ऋषिवर दयानन्द ने मानवमात्र के सर्वांगीण विकास का सन्देश दिया। उस ऋषि का दर्शन एक पूर्णजीवन का दर्शन प्रस्तुत करता है, अन्नमय कोष (शरीर) से आनन्दमय कोष (प्रभुमिलन) तक की प्राप्ति का आदेश देता है। ऋषि ने संसार को सच्ची एवं वास्तविक कर्मभूमि कहा है। यदि आज का विश्व एक सुखद, शान्त, मनोरम एवं भव्य भविष्य की प्राप्ति करना चाहता है, तो उसे ऋषिवर के शिक्षादर्शन की ओर पूरा ध्यान केन्द्रित करना होगा।

*आर्यसमाज के आठवें नियम में उस ऋषि ने कहा है कि "**अविद्या का नाश एवं विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।**" सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखा है - "**सन्तानों की उत्तम शिक्षा, विद्या, गुण, कर्म, स्वभावस्वरुप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता व आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है।**" यह ऋषि की शिक्षा नीति आधार स्तम्भ में भर्ती करना मात्र न होकर माता के गर्भधारण से पूर्व शिशु के लिए तैयारी से प्रारम्भ होती है।*

शिक्षा को शिशु की गर्भस्थ अवस्था से ही महत्व देते हुए आचार्य दयानन्द कहते हैं कि व्यक्ति की देख-रेख गर्भाधान से होनी चाहिए, क्योंकि इस काल में भौतिक शरीर का निर्माण एवं मानसिक संस्कार डाले जाते हैं। जरा सी असावधानी महती हानि का कारण हो सकती है। अतः उस काल में माता की प्रसन्नता, शोकरहित का परिवेश आवश्यक है।

*तत्पश्चात् ऋषिवर माँ की गोद में शिक्षा की योजना देते हुए लिखते हैं कि जितना माता से सन्तानों को उपदेश एवं उपकार पहुंचता है, उतना किसी अन्य से नहीं ... वह माता जो गर्भाधान से लेकर जब तक पूरी विद्या न हो, तब तक सुशीलता का उपदेश करें। अतएव ऋषिवर कहते हैं कि "**जब बोलने लगे, तब उसकी माता बालक की जिह्वा जिस प्रकार कोमल होकर स्पष्ट उच्चारण कर सके वैसा उपाय करे, जिससे वर्णस्थान, प्रयत्न शुद्ध हो अर्थात् जैसे प इसका ओष्ठ स्थान और स्पष्ट प्रयत्न, दोनों होठों को मिलाकर बोलना, ह्रदय, दीर्घ, प्लुत अक्षरों को ठीक-ठीक बोलना**"। इस प्रकार ऋषि मां की ममता के साथ उच्चारण की शिक्षा-व्यवस्था देते है, ताकि उच्चारण निर्दोष हो एवं इसी के अनिवार्य फलस्वरुप नारी-शिक्षा की महत्ता भी दर्शाते हैं।*

दूसरे समुल्लास में माताओं को आगे निर्देश देते हैं, जब वह (शिशु) कुछ-कुछ बोलने लगे व समझने लगे तब सुन्दर वाणी और बड़े, छोटे मान्य माता-पिता के पास बैठने आदि (व्यवहार) की

thearyasamaj.org

शिक्षा करे। अर्थात् जब बालक को होश आये, तब माँ उसके लोक-व्यवहार व शिष्टाचार सिखावे। इसी के साथ, देवनागरी अक्षरों का अभ्यास करावे। अन्य देशीय भाषाओं के अक्षरों का भी, यहां दूरदर्शी ऋषि अनायास शैशवकाल से ही एकाधिक भाषाओं के ज्ञान ग्रहण का उपदेश देकर देश एवं विदेश के विभिन्न भागों में सामंजस्य पैदा करते हैं।

इसी बीच पिता का परम कर्त्तव्य होता है कि वह बालक को आत्वविश्वास, शौर्य, संयम, धैर्य, प्रसन्नता एवं सत्य भाषण में रुचि पैदा करें। इस प्रकार घर की शिक्षा के पश्चात् ऋषि बालक को विद्यालय में भेजने का आदेश देते हैं। इस विद्यालय की चार प्रमुखताएँ है :-

आवश्यक शिक्षा - ऋषि शिक्षा को राष्ट्रीय कर्त्तव्य एवं जन-जन का मौलिक अधिकार घोषित करते हैं जो राष्ट्र का प्रमुखतम कर्त्तव्य है। ऋषि उपदेश देते हैं कि **"नौवे वर्ष के आरम्भ तक अपने सन्तानों का उपनयन करके आचार्यकुल अर्थात् जहां पूर्ण विद्वान् पुरुष एवं पूर्ण विदुषी स्त्री शिक्षा व विद्या दान करने वाली हों वहां लड़के-लड़कियों को भेज दें।"** शिक्षा की अनिवार्यता का आदेश देते हुए कहते हैं कि **"राजा को योग्य है कि सब कन्या और लड़कों को ब्रह्मचर्य में रखकर विद्वान् बनाना जो इसको न माने तो माता-पिता को दण्ड देना।"**

सामान खान-पान व गुरुकुल प्रणाली :- ऋषिवर के अनुसार शिक्षाकाल पर्यन्त कुमार व कुमारी ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए गुरुकुल वा कन्याकुल में रहे, जहां पर उनसे समान खानपान आदि व्यवहार हो, चाहे वह राजा का लड़का हो वा किसी दरिद्र का शिक्षा के साम्यदर्शन की परिकल्पना से समाज में भ्रातृत्व के भाव एवं पारिवारिक समाजवाद के भाव स्पष्टतः दृष्टिगोचर होते हैं।

सहशिक्षा से दूर :- स्वामी दयानन्द का मत था कि लड़के एवं लड़कियां अलग-अलग पाठशालाओं में पढ़े, जो ग्राम से दूर हों। इस विषय में वे इतने कठोर हैं, लड़कों के गुरुकुल में पांच वर्ष की कन्या व कन्याओं के गुरुकुल में पांच वर्ष का लड़का भी जाने पावे। इसी प्रकार वे सहशिक्षा के कटुतम विरोधी थे।

आवश्यक नारी शिक्षा :- एक समय था जब स्त्रियां घरों में बन्द थीं। अशिक्षित रहना उनका मूलभूत गुण था। स्त्रीशूद्रौ नाधीयाताम् श्रुति का नारा बुलन्द था। वेद सब स्त्री-पुरुषों को समान रुप से पढ़ने का अधिकार देता है। यहां तक कहा कि जो स्त्रियों के पढ़ने का निषेध करते हैं, वह तुम्हारी मूर्खता, निर्बुद्धि एवं स्वार्थ का प्रमाण है, क्योंकि स्वामी जी महाराज गृहस्थ को आनन्दमय एवं अनिन्द्य बनाना चाहते थे। स्त्रियों को विद्या की अधिकारी एवं पति के समान बनने को तैयार किया। यदि स्त्री (अर्थात माता) अनपढ़ हो, तो महर्षि के शिक्षा दर्शन का प्रमुख स्तम्भ माता का दायित्व शून्य हो जाता है एवं सारा भवन धराशायी होने लगता है। इसी से स्त्री शिक्षा के महत्व को जाना जा सकता है।

thearyasamaj.org

वैदिक शिक्षा दर्शन को तृतीय स्तम्भ आचार्य होता है। शतपथ का वचन है - **"मातृमान् पितृमानाचार्यमान् पुरुषो वेद।"** अर्थात् जब तीम उत्तम शिक्षक एक माता, दूसरे पिता एवं तृतीय आचार्य मिलता है, तभी मनुष्य मनुष्य बन सकता है। परन्तु आचार्य कौन ? ऋषि उत्तर देते हैं :- "उस व्यक्ति को जो विद्यार्थी को अत्यन्त प्रेम से धर्मयुक्त व्यवहार की शिक्षा पूर्वक विद्या देने के लिए तन, मन व धन से प्रयत्न करे, उसे **"आचार्य"** कहते हैं।

आज का शिक्षक समझता है कि शिक्षण, कालेज से एक निश्चित धन राशि मासिक दिलाने का धन्धा है। स्वयं को किराये का मजदूर समझता है। आज जन्म योजनानुसार न होकर ये सन्तानें अचानक या मौका पाकर वासना तृप्ति का परिणाम है। अन्धे, घुटे एवं विलासी माता-पिता हैं। चारों पक्ष माता-पिता, आचार्य, राजा एवं छात्र कर्त्तव्यच्युत हैं, तो राष्ट्र क्यों न बेईमानी व रिश्वतखोरी का घर बने ?

परन्तु महर्षि दयानन्द इस विश्व को वैदिक परम्परा के अनुरुप वर्णाश्रम-व्यवस्था से व्यवस्थित करना चाहते थे। इसलिए वर्तमान ढांचे को उखाड़ फैंक वे एक क्रान्तिकारी परिवर्तनमय विश्व का निर्माण करना चाहते थे। इसके लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान उन्होने शिक्षा को दिया जो निम्न प्रकार से है :- (१) सन्तानोत्पत्ति केवल सन्तानोत्पत्ति के लिए योजनानुसार एवं पवित्र भावना से हो, न कि काम तृप्ति का परिणाम। (२) जीवन ब्रह्मचर्य संयम एवं त्याग वाला हो। (३) सभी नर-नारी विद्वान् एवं धार्मिक हों।

इसी के साथ अनिवार्य शिक्षा, समान भ्रातृत्व व्यवहार एवं मर्यादा वाली गुरुकुल प्रणाली, नारी शिक्षा की अनिवार्यता हो एवं सह शिक्षा का नाश हो। विद्यार्थी अध्ययनकाल में अनिवार्य अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सभी विद्याध्ययन करके विद्वान् व धार्मिक सद्गृहस्थ बनें।

उपर्युक्त तमाम विचारों को यदि ईमानदारी से विश्लेषण करेंगे तो पाएंगे आज की समस्त समस्याओं का समाधान ऋषि दयानन्द के शिक्षा दर्शन में विद्यमान है। विश्व के तमाम शिक्षा विद् छात्रों के शैक्षणिक विकास के तमाम पहलुओं पर चिन्तन प्रस्तुत करते हैं, वे सब एक दूसरे के विचारों से पर्याप्त विसंगतियों से भरे हें। कोई उसे विकासात्मक प्रक्रिया से जोड़ता है तो कोई अवस्थाजन्य से, किन्तु अधिकांश शिक्षाविद् परिवेश को भी शिक्षा का आधार मानने लगे हैं। हम पाते हैं कि स्वामी दयानन्द आधुनिक भारत के प्रथम ऐसे शिक्षाविद हैं जो मानते हैं कि शिशु की शिक्षा गर्भाधान से पूर्व शुरु हो जाती है। जरा कल्पना कीजिए जिस प्रणाली में इतनी बड़ी एवं सशक्त पूर्व योजना होगी वहां का शैक्षिक परिदृश्य कितना गौरवास्पद हो सकता है। आइये, हम महर्षि दयानन्द के सपनों का भारत बनाने की दिशा में एक आगे बढ़ाएं। उनके शिक्षा सिद्धान्तों को सरकारी तन्त्र में मजबूती से लागू करने का प्रयास करें।

-आचार्य कर्मवीर

thearyasamaj.org

वैचारिक

आर्यसमाज और विश्व शांति

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने मनुष्य मात्र के हित कल्याण, सुख, समृद्धि और उन्नति के उद्देश्य के लिए आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के छठे नियम में भी बताया है कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना। ऋषि की इस भावना में संसार की उन्नति व समृद्धि की भावना है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की यह बात संसार भर के मनुष्यों के लिए थी, किसी एक जाति वर्ग व सम्प्रदाय के लिए नहीं थी।

मुन्शी समर्थ दान ने भी कहा कि "मत-मतान्तरों के विषय में जो लिखा गया है वह प्रीतिपूर्वक सत्य के प्रकाश होने और संसार के सुधरने के अभिप्राय से लिखा गया है, किन्तु निन्दा की दृष्टि से नहीं"- ऐसा उन्होंने (मुन्शी समर्थदान) सत्यार्थ प्रकाश के विषय में लिखा है।

संसार के लोगों की भलाई व श्रेष्ठता के लिए ही आर्य शब्द की व्याख्या करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य का अर्थ "धर्मयुक्त गुण, कर्म, स्वभाव वाले, उत्तम गुण, कर्म, स्वभावयुक्त रहना बताया है। जैन, बौद्ध, इस्लाम क्रिश्चियनों की भांति आर्य किसी जाति, वर्ग, सम्प्रदाय के अनुयायी नहीं है।"

इसी प्रकार वैदिक धर्म मनुष्य मात्र के लिए है इसके अनुसार :-

(१) वैदिक धर्म का पूरा नाम सत्य, सनातन वैदिक है, जो अत्यन्त प्राचीन है, इसमें चार वर्ण व चार आश्रम है, चारों वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र जन्मना नहीं, अपितु गुण, कर्म, स्वभाव से होते हैं तथा चार आश्रम है मनुष्य का जीवन इन चार आश्रमों में व्यवस्थानुसार बांटा गया है, सोलह संस्कार समय-समय पर करने होते हैं।

(२) महर्षि दयानन्द सरस्वती के वेदानुसार ईश्वर को विश्व की सर्वोच्च शक्ति बताया है, जिसका मुख्य नाम "ओ३म्" है, वैद में वर्णित इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, वायु आदि उस एक ईश्वर के ही नाम है, वही सृष्टि पालना कर्ता है सर्वशक्ति मान है, निराकार है, अनादि अनन्त व अजन्मा है।

(३) छह दर्शन सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व मीमांसा व वेदान्त को माना है, जो वेदों को स्वतः प्रमाण मानते हैं, ऋषि दयानन्द ने प्रकाश किया है कि "चारों वेदों को निभ्रान्त स्वतः प्रमाण मानता हूँ वे स्वयं प्रमाण स्वरुप है, जिनके प्रमाण होने में किसी अन्य ग्रन्थ की अपेक्षा नहीं, जैसे सूर्य व प्रदीप अपने स्वरुप के स्वतः प्रकाशक और पृथिव्यादि के भी प्रकाशक होते हैं, वैसे चारों वेद है।"

(४) ऋषि ने ईश्वर के समान ही जीव को भी अनादि तथा नित्य माना है "जीव और ईश्वर स्वरुप और वैधर्म्य से भिन्न और व्याप्य व्यापक और साधर्म्य से अभिन्न है।"

(५) ऋषि के अनुसार पुनर्जन्म होता है तथा मनुष्य को अच्छे बुरे कर्मों का फल भोगना पड़ता है।

(६) ऋषि के अनुसार स्त्रियों की स्थिति पुरुषों के समान होनी चाहिए। प्राचीन काल में स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार थे। गार्गी, मैत्रेयी, मदालसा, कैकेयी विद्वान स्त्रियाँ थी।

(७) ऋषि दयानन्द ने बताया कि मूर्ति पूजा वेद विरुद्ध है, वेद में दिया है कि **"न तस्य प्रतिमा अस्ति"** - यजु. ३२/३। जब ईश्वर जन्म ही नहीं लेता तो उसकी मूर्ति का से आई।

ऋषि दयानन्द ने प्रत्येक मत से विरोधी बातों को दूरकर अंध विश्वास, पाखण्ड व अस्पृष्य को निकाल तमाम विचारों वाली बातों को मानने पर बल दिया, जिससे विश्व में मतैक्य हो सके। आपसी विपरीत व विरोधी बातें दूर हो, ईर्ष्या वैमनस्य दूर कर सुख व शान्ति स्थापित हो सके।

पता : चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा।

thearyasamaj.org

नेताओं के भ्रष्टाचार को उजागर करके प्रचार पाना आसान है, लेकिन इसे दूर करना कठिन।

सामयिक नेताओं का भंडाफोड़ काफी नहीं

जो लोग भंडोफोड़ को व्यवस्था-परिवर्तन की शुरुआत समझ रहे हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि भ्रष्टाचार की असली जड़ कहां है। जब तक जड़ पर प्रहार नहीं होगा, यह वृक्ष लहलहाता रहेगा।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

देश में राजनीति का पता ही नहीं चल रहा है कि वह किस दिशा में जा रही है। लोग पापड़ को पुलाव समझकर खा रहे हैं। कभी इस नेता, कभी उस नेता और कभी किसी नेता के रिश्तेदार के विरुद्ध आरोपों का पुलिंदा उछालकर हम समझते हैं कि हम देश की राजनीति में बुनियादी परिवर्तन ला रहे हैं। इसमें शक नहीं कि आज भ्रष्टाचार देश का सबसे ज्वलंत मुद्दा बन गया है। इस जलते हुए अलाव में अगर आप घासलेट में भीगी एक चिंदी भी उछालते हैं तो प्रचार की आग भड़क उठी है। आग भी भड़कती है और बदबू भी फैलती है। इसके बावजूद इसे गलत बिलकुल नहीं कहा जा सकता है।

यह साहस ही नहीं, दुस्साहस भी है। यह बहुत जोखिमभरा काम है। सरकार की परते उखाड़ने के लिए ऐसे दो-चार भंडाफोड़ ही काफी है। अकेले बोफोर्स ने राजीव गांधी जैसे युवा प्रधानमंत्री का भाग्य अस्त कर दिया था तो यह नई भंडाफोड़ माला पता नहीं अगले कितने वर्षों तक कांग्रेस के भाग्य पर भारी पड़ेगी। लेकिन मूल प्रश्न यह है कि क्या कांग्रेस के डूब जाने से व्यवस्था परिवर्तन हो जाएगा ? सांपनाथ मरेंगे तो उनकी जगह नागनाथ आ जाएंगे।

यह जोखिमभरा काम इसलिए है कि इसका लक्ष्य भंडाफोड़ करके प्रचार पाना है। वह प्रचुर मात्रा में मिल भी रहा है, लेकिन इनमें से कुछ आरोप अगर गलत या निराधार सिद्ध हो गए तो ताश का सारा महल ही धराशायी हो जाएगा। मान लें कि सारे आरोप सही हैं, तो क्या फुलझड़ियों से रोशनी हो जाएगी ? मान लें कि कुछ मंत्री रंगे हाथों पकड़ लिए गए और उनके इस्तीफे हो गए तो भी क्या हो जाएगा ? क्या सरकार गिर जाएगी ? क्यों गिर जाएगी, कैसे गिर जाएगी ? सरकार न गिरे, संसद के चुनाव न हो और हम सांसद अपनी कुर्सी में पांच साल तक जमा रहे, यह सभी पार्टियां चाहती है। सांसद चाहे किसी भी पार्टी का हो उसे पांच करोड़ रुपये की सांसद राशि हर साल मिलती है। यदि संसद आज भंग हो जाए तो दो साल के दस करोड़ रुपए तो उसके हाथ के नीचे से खिसक गए। इसके अलावा जिसने भी पांच साल पूरे नहीं किए, उस सांसद की पेंशन भी खतरे में पड़ जाएगी। इतना ही नहीं, दो साल के मोटे वेतन और भत्ते का घाटा भी बर्दाश्त करना पड़ेगा। इसलिए घोटाले उछलते रहेंगे और संसद बरकरार रहेगी। आज तक किस घोटाले को लेकर सरकार या संसद बर्खास्त हुई है ?

घोटाले के फूटने के कारण सरकार का गिरना तो दूर का सपना है, इनके कारण उसकी खाल पहले से ही मोटी होती चली जाती है। एक टीवी चैनल ने सरकार के इस रवैये को नाम दिया है 'ऑपरेशन धृतराष्ट्र'। मैने उसी चैनल पर कहा कि इसे आप 'ऑपरेशन महाधृतराष्ट्र' कहिए क्योंकि महाभारत का धृतराष्ट्र केवल देखता नहीं था, दृष्टिहीन था। हमारा धृतराष्ट्र तो न देखता है, न सुनता है, न बोलता है। उसने गांधी जी के तीनों बंदरों को भी मात कर दिया है। वह अंधा भी है, बहरा भी है, और गूंगा भी है। जो लोग भंडाफोड़ की व्यवस्था-परिवर्तन की शुरुआत समझ रहे हैं, उन्हें पता होना चाहिए कि भ्रष्टाचार की असली जड़ कहां है। जब तक जड़ पर प्रहार नहीं होगा, यह वृक्ष लहलहाता रहेगा।

आप नेताओं का भंडाफोड़ कर रहे हैं, यह तो बहुत अच्छा है। इससे देश में जागृति फैल रही है, लेकिन क्या देश

thearyasamaj.org

में एक भी नेता ऐसा है या एक भी पार्टी ऐसी है, जो हाथ उठाकर कह सके कि वह भ्रष्टाचार से मुक्त है ? हमारी राजनीति काजल की कोठरी बन गई है । उसमें जाने वाला एक भी आदमी ऐसा नहीं मिल सकता, जिसके दामन पर दाग न हो। इस कोठरी में जिस दिन आप भी पहला कदम रखेंगे, आपका दामन भी उजला नहीं रह पाएगा। इसलिए मैं कहता हूं कि भंडाफोड़ का यह सारा द्रविड़ प्राणायाम अगर सिर्फ पार्टी बनाने के लिए हो रहा है तो आगे जाकर भारत की जनता निराशा के गर्त में गिरे बिना नहीं रहेगी।

जरुरी यह है कि भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने के लिए उसकी जड़ों पर प्रहार किया जाए। यह जड़ कहां है ? यह जनता में है। जनता से सरककर ही यह नेताओं में चली आती है। एक बार नेता भ्रष्ट हुए नहीं कि भ्रष्टाचार का विषाक्त चक्र घूमने लगता है । लोकतंत्र का मालिक कौन है? जनता या नेता ? जब मालिक ही भ्रष्ट हों तो नौकरों का क्या पूछना ? चाबी तो नौकरों के हाथ में होती है। वे खुली लूट करते हैं। यदि जनता संकल्प कर लें कि वह कोई भी गैरकानूनी या अनैतिक काम करवाने के लिए नेताओं पर दबाव नहीं डालेगी और उन्हें रिश्वत नहीं देगी तो किसकी हिम्मत है कि वह भ्रष्टाचार करेगा ?

हम नेता और नौकरशाह को पता होगा कि अगर उसने भ्रष्टाचार किया तो अदालत उसको जब सजा देगी तब देगी, लेकिन भारत की जागरुक जनता तत्काल सीधी कार्रवाई करेगी। हमारे नेताओं और नौकरशाहों को पता है कि देश के मुखर मध्यमवर्ग २०-३० करोड़ लोग खुद भी भ्रष्टाचार का सहारा लेने से नहीं चूकते, तो वे भ्रष्टाचार के विरुद्ध खड्गहस्त क्यों होंगे ? इस मुखर मध्यमवर्ग को कौन फटकारेगा ? क्या वे लोग फटकार सकते हैं, जो पार्टी बनाकर इन्हीं के वोटों के दम पर सत्ता में आना चाहते हैं ?

नेताओं के भ्रष्टाचार को उजागर करके प्रचार पाना आसान है, लेकिन भ्रष्टाचार को दूर करना कठिन। पग-पग पर फैले हुए असंख्य छोटे-मोटे भ्रष्टाचारों से जनता त्रस्त है . यदि आंदोलनकारी आम आदमी के इस दर्द को समझें और उसके निवारण के लिए सीधी कार्यवाही करें तो भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाना संभव है।

हास्यम

एक आदमी डाकखाने में रखे हुए कलम से कोई फार्म भरने की कोशिश कर रहा था, लेकिन जब वह सरकारी कलम चलने से बिल्कुल इन्कार कर बैठा तो उसने डाकखाने के एक बाबू से पूछा, "क्या यह कलम बाबाआदम के जमाने का है ?"

"जनाब, पूछताछ, पास वाली खिड़की में कीजिए", बाबू ने जवाब दिया।

●

एक आदमी जब अपने घर पहुंचा तो उसे बताया कि उसकी पत्नी ने दो लड़कियों को जन्म दिया है, आदमी चैन की सांस लेकर बोला, "क्या खूब ! ठीक दो बजे मैं घर पहुंचा और दो लड़कियों के होने की खबर मुझे मिली, अच्छा हुआ मैं बारह बजे अपने घर नहीं पहुंचा।"

●●

स्टेशन पर गाड़ी थोड़ी देर ही ठहरी थी, एक मुसाफिर ने गाड़ी के रूकते ही एक बच्चे को, जो मजदूर मालूम पड़ता था, बुलाया और कहा, "लो, यह दस रुपये ले जाओ, और चार पूरियां खरीद लाओ, दो तुम खा लेना, दो मुझे दे देना।"
जब गाड़ी चलने ही वाली थी तो वह लड़का आया और बोला, "यह लीजिये अपनी पांच रुपये वापस हलवाई के यहां दो ही पूरियां थीं, वे मैने खा लीं।"

●●●

गुरुकुल होशंगाबाद का १०३वाँ वार्षिकोत्सव

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) का १०३ वाँ वार्षिकोत्सव दिनांक ५,६,७ दिसम्बर २०१४ को आयोजित किया गया है। इस उत्सव में देश के ख्यातनाम विद्वानों द्वारा विविध विषयों पर उपदेश व प्रवचन होंगे तथा अध्ययनरत ब्रह्मचारी छात्रों के पाणि तथा वाणी के मनोहर कार्यक्रम देखने को मिलेंगे। आप समस्त गुरुकुल प्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि उक्त कार्यक्रम में पधारकर कार्यकम की शोभा बढ़ायें व विद्वानों के प्रवचनों से लाभ लें।

भावत्कः - **आचार्य योगेन्द्र याज्ञिक**, सचिव,
आर्ष गुरुकुल समिति, होशंगाबाद (म.प्र.)

thearyasamaj.org

विश्लेषणात्मक

"सच्ची आध्यात्मिकता"

- मनमोहन कुमार आर्य

आजकल आध्यात्मिकता या spiritually शब्द का काफी प्रयोग किया जाता है। आध्यात्मिकता क्या है, इस पर यदि किसी से प्रश्न किया जाये तो हमें लगता है कि सबके उत्तर अलग-अलग अर्थात् एक दूसरे के पूरक न होकर परस्पर विरुद्ध भी हो सकते हैं। अतः सच्ची आध्यात्मिकता पर निष्पक्ष रुप से विचार करना प्रासंगिक एवं आवश्यक है। हम अनुभव करते है कि आत्म तत्व का अध्ययन, विवेचन व निर्धारण ही अध्यात्म का उद्देश्य एवं इस प्रकार के अध्ययन से जो परिणाम सामने आते हैं वह सत्य ज्ञान ही अध्यात्म या आध्यात्मिकता है। जब हम अध्यात्म का अध्ययन आरम्भ करते हैं तो हमें विदित होता है कि यह सारा संसार चेतन व अचेतन दो तत्वों में बंटा हुआ है। अचेतन तत्व के लिए जड़ व निर्जीव शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। चेतन तत्व को आत्म तत्व के नाम से भी जाना जाता है। यदि हम एकदेशी चेतन तत्व जीव पर विचार करें ते हम देखते हैं कि हमारे अनेक शब्द कहीं न कहीं व किसी न किसी रुप से इससे जुड़े हैं। कुछ शब्द हमारे ध्यान में आते हैं वह है - जीव, आत्मा, जीवात्मा, जैविक, जन्मा, अजन्मा, जीव-जन्तु, ज्ञान व ज्ञानी, जिज्ञासा। जीवात्मा के अतिरिक्त एक अन्य चेतन तत्व जो सर्वव्यापक एकरस, निरवयव व सर्वज्ञ है, वह परमात्मा है। हम अपनी आंखों से ब्रह्माण्ड को देखते हैं, जिसमें सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, नक्षत्र, अग्नि, वायु, जल, आकाश, वन-उपवन, पर्वत-मैदान आदि है। सूर्य अपनी धूरी पर घूम कर सौर्य मण्डल के अन्य सभी ग्रहों व उपग्रहों को गति प्रदान कर रहा है। पृथ्वी अपनी धूरी पर घूमने के साथ सूर्य की परिक्रमा कर रहीं है और चन्द्र अपनी धूरी पर घूमने के साथ पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। अमावस्या की रात्रि में आकाश में नक्षत्र व तारे आदि जगमगाते दिखते हैं तो वह दृश्य देखकर मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह सब कैसे अस्तित्व में आये है ? दो ही उत्तर है, प्रथम कि यह स्वमेव बना और दूसरा कि एक सत्य, चेतन, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ सत्ता के द्वारा बनाया गया है। स्वमेव

निवेदन

यह लेख हमने अपने एक पाठक मित्र श्री रघु पालीवाल की हमारे एक लेख **"क्या हमने अपने साध्य व उसकी प्राप्ति साधनों को जाना है"** पर दिनांक ६-९-२०१४ को प्राप्त हुई प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर लिखा है। पाठक इसका मूल्यांकन कर सकते हैं। श्री रघु पालीवाल जी की इमेल प्रस्तुत है।

Respected sir,
Excellent collection,
Heartily Thnaks,
If you have article related with what is **ADHYATIMKTA** how can we go for this.
Please mail, or write the name of book.
With regards,
R. Paliwal, *Dy, Manager,*
Mother Dairy, Delhi-110092

बना है इसकी हमारी बुद्धि खण्डन कर बताती है कि संसार में अनादि व नित्य तीन पदार्थों - ईश्वर, जीव व प्रकृति के अतिरिक्त कुछ भी स्वमेव नहीं बनता। प्रत्येक सत्तावान निर्मित वस्तु के तीन कारण होते हैं, जिनमें प्रथम निमित्त कारण, दूसरा उपादान कारण और तीसरा साधारण कारण होता है। निमित्त कारण चेतन होता है। हम यह लेख लिख रहे हैं तो हम इस लेख के निमित्त कारण है। उसका उपादान कारण हमारा कम्प्यूटर, हमारा हिन्दी-अंग्रेजी टंकण ज्ञान आदि है। साधारण कारणों में हमारी मेज, कुर्सी, विद्युत आदि को ले सकते हैं।

इसी प्रकार से इस ब्रह्माण्ड के परिप्रेक्ष्य में जब हम निमित्त कारण पर विचार करते हैं तो सबसे प्रबल विचार व तर्क यह सामने आता है कि इस जगत् का निमित्त कारण सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान ईश्वर है, जिसमें पूर्व लिखित गुण विद्यमान है। महर्षि दयानन्द ने चारों वेदों से सृष्टिकर्ता ईश्वर

thearyasamaj.org

के कुछ विशेष गुणों को संग्रहित कर उन्हें आर्यसमाज के दूसरे नियम में स्थान दिया है। इसी प्रकार से उन्होने ईश्वर के विषय में **स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश** तथा **आर्योद्देश्यरत्नमाला** में भी ईश्वर के कुछ प्रमुख गुणों पर संक्षेप में प्रकाश डाला है। हम यहां तीनों को प्रस्तुत करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे है। प्रथम आर्यसमाज का दूसरा नियम प्रस्तुत है। यह है - **"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अनन्त, निर्विकार, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।"** इस नियम में ईश्वर के २३ गुणों व विशेषणों का वर्णन है वह यथार्थ व सत्य है क्योंकि इनका सृष्टि में प्रत्यक्ष हो रहा है। कोई वैज्ञानिक भी सृष्टि रचना में इन गुणों की सत्ता होने से इन्कार नहीं कर सकता अर्थात् यह नियम ज्ञान व विज्ञान सम्मत है। संसार में प्रचलित सभी मत-मतान्दरों की इन गुणों के विपरीत ईश्वर सभी मान्यतायें पूर्णतः असत्य व मिथ्या है। यह बात हम ज्ञान-विज्ञान की पोषक अपनी बुद्धि के आधार पर विचार व चिन्तन के आधार पर कह रहे हैं और ऐसा ही महर्षि दयानन्द व हमारे सभी ऋषि-मुनियों ने किया व माना है। प्रत्येक पाठक को अपनी अन्ध श्रद्धा व विश्वास को कुछ देर के लिए पृथक रखकर इस नियम पर विचार करना चाहिये। पूरा सत्यार्थ प्रकाश एक, दो या तीन बार पढ़कर आप इस ब्रह्माण्ड के अधिकांश रहस्यं से परिचित हो सकते हैं। यदि किसी को इस नियम का ज्ञान नहीं है या इस पर शका है तो इसका कारण अज्ञानता, अन्द श्रद्धा व स्वाध्याय की अप्रवृत्ति है जो सत्य के ज्ञान व निर्धारण में बाधक है।

अब हम सत्यार्थ प्रकाश के **'स्वमन्तव्यामन्तव्य'** प्रकाश प्रकरण से ईश्वर विषयक महर्षि दयानन्द के विचारोंको प्रस्तुत करते हैं - **"ईश्वर कि जिसकों ब्रह्म, परमात्मादि नामों से कहते हैं, जो सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त है जिसके गुण, कर्म, स्वभाव, पवित्र हैं जो सर्वज्ञ, निराकार, सर्वव्यापक, अजन्मा, अनन्त, सर्वशक्तिमान, दयालु, न्यायकारी, सब सृष्टि का कर्ता, धर्त्ता, हर्त्ता, सब जीवों को कर्मानुसार सत्य न्याय से फलप्रदाता आदि लक्षणयुक्त परमेश्वर है, उसी को मानता हूँ।"** महर्षि दयानन्द के लघु ग्रन्थों में एक ग्रन्थ आर्योद्देश्यरत्नमाला है जिसमें उन्होने १०० विषय लिख कर उन पर सारगर्भित रुप से प्रकाश डाला है। इस ग्रन्थ में पहला विषय ईश्वर ही को लिया गया है और इस पर प्रकाश डालते हुए वह लिखते हैं - **'जिसके गुण-कर्म-स्वभाव और स्वरुप सत्य ही हैं, जो केवल चेतनमात्र वस्तु है तथा जो एक अद्वितीय, सर्वशक्तिमान, निराकार, सर्वत्र व्यापक, अनादि और अनन्त, सत्य गुणवाला है, और जिसका स्वभाव विनाशी, ज्ञानी, आनन्दी, शुद्ध, न्यायकारी, दयालु और अजन्मादि है, जिसका कर्म जगत् की उत्पत्ति, पालन और विनाश करना तथा सब जीवों को पाप-पुण्य के फल ठीक-ठाक पहुंचाना है, उसी को ईश्वर कहते हैं।'** वेदों के चुने हुए मन्त्रों की आध्यात्मिक व्याख्या महर्षि दयानन्द ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ आर्याभिविनय में की है। यह ग्रन्थ भी आध्यात्मिक रुचि बनाने, बढ़ाने व आध्यात्मिक लाभ के लिए उपयोगी है। इस ग्रन्थ में ईश्वर से सार्थक प्रार्थनायें की गई है, जिसकों एक बार बढ़ने पर बार-बार पढ़ने का मन होता है। अध्यात्म रस व आनन्द के पिपासुओं को समय-समय पर इसका रसपान अवश्य करना चाहिये, इससे वह सूख प्राप्त होता है जो धन आदि की प्राप्ति से किसी को कभी नहीं हुआ है। यहां हम एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य का उल्लेख भी करना चाहते हैं, जिसे महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के प्रथम नियम में प्रस्तुत किया है। यह तथ्य है कि **"सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।"** इसका सरल अर्थ है कि सब सब सत्य विद्याओं तथा सृष्टि के समस्त पदार्थों का आदि मूल ईश्वर है। संसार के सभी वैज्ञानिकों के लिए सिद्धान्त को जानना और मानना परम कल्याणकारी हो सकता है।

यह तो ईश्वर के स्वरुप व उसके निर्धारण पर विचार प्रस्तुत किये हैं। **अब हम कौन है और क्या है ?** यह संसार का सबसे बड़ा और मौलिक प्रश्न है, जिसका उत्तर केवल वेदों से ही मिलता है। हम सब जानते हैं कि हम एक चेतन सत्ता है, जिसका प्रमाण हमें सुख व दुःख की अनुभूति व इनका ज्ञान होना है। निर्जीव व जड़ पदार्थों को सुख व दुःख का ज्ञान नहीं होता है। चेतन तत्व या पदार्थ उस कहते हैं,

thearyasamaj.org

जिसका पहला गुण होता है और दूसरा उस ज्ञान के अनुसार कर्म, क्रिया या गति करना। अतः हम इन गुणों के कारण, जीवात्मा, जीव या चेतन तत्व हैं। विचार करने पर हम यह भी पाते हैं कि हम एकदेशी (अत्यन्त सीमित परिवेश वाले) हैं, सर्वव्यापक नहीं है। हम सुख को पसन्द करते हैं, दुःख को नहीं। हम अलप्ज्ञ अर्थात् सीमित ज्ञान वाले हैं, सर्वज्ञ या सब कुछ जानने वाले नहीं है। हमारी शक्ति सीमित है, असीमित नहीं अथवा हम अपने आपको सर्वशक्तिमान नहीं कह सकते। हम जन्म-मरण धर्म हैं, यह भी निर्विवाद सत्य है। हमें जन्म लेने, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि योनि में से किसीएक भी प्राप्त करने की छूट नहीं है, यहां हम विवश हैं। यहां तक कि हम देश, काल व अपने माता-पिता भी तय नहीं कर सकते। यह सब ईश्वर के आधीन है।

ईश्वर इस मायने में स्वाधीन और हम पराधीन हैं। ईश्वर यद्यपि स्वाधीन है, परन्तु वह भी अनुशासन व नियमों में बंधा हुआ है। वह स्वेच्छाधारी नहीं है। जो जैसा कर्म करता है उसे वैसा ही फल मिलता है। अच्छा कर्म पुण्य कहलाता है और उससे सुख मिलता है, बुरा कर्म पाप कहलाता है और ससे हमें दुःख मिलता है। हम अल्पज्ञ होने के कारण, राग, ईर्ष्या, द्वेष, सुख, दुःख, निमेष-उन्मेष, इन्द्रिय अन्तर विकारों से आबद्ध हैं। इन्द्रिय अन्तर्विकारों में राग, द्वेष काम, क्रोध, लोभ व मोह आदि दुगुर्ण आते हैं, जिनमें हमें आध्यात्मिक व सांसारिक जीवन में हानि होती है। विचार करने पर यह भी ज्ञान होता है कि हम अनादि, नित्य, अजन्मा व अत्यन्त सूक्ष्म परिमाण वाले हैं, अर्थात् हमारी कभी उत्पत्ति नहीं हुई, हम कभी मरेंगे या नष्ट नहीं होंगे और हमारा अस्तित्व सदा बना रहेगा। यह भी एक तथ्य है कि हमें ईश्वर ने नहीं बनाया है और न ही ईश्वर को किसी ने बनाया है। इन दोनों व प्रकृति का अस्तित्व स्वयं सिद्ध है अर्थात् तीनों नित्य है। अध्यात्म का अध्ययन कर हमें विवेक की प्राप्ति होती है, जिससे हम दुर्गुणों से बचते हैं और आत्मिक उन्नति करते हैं। यह कुछ हमने जीवात्मा अर्थात **मैं कौन हूँ और क्या हूँ ?** प्रश्न पर विचार कर जाना है। ऐसा ही ज्ञान हमें वेदों, उपनिषदों, दर्शनों, मनुस्मृति, गीता, रामायण व महाभारत आदि में मिलता है।

ईश्वर जीवात्मा व प्रकृति को संक्षेप में जान लेने के बाद अब हमें अपने जीवन के उद्देश्य के बारे में जानना है। **हम अधिक विस्तार में न जाकर सेक्षेप में कहना चाहते हैं कि भोग वन अपवर्ग ही जीवन के उद्देश्य हैं। भोग में सुक व दु)ख आते हैं और अपवर्ग में दुःखों की सर्वथा निवृत्ति अर्थात् जन्म व मरण के चक्र से अवकाश के सात ३१ नील १० अरब ४० खरब वर्षों के लिए पूर्ण आनन्द व सुख की अवस्था की प्राप्ति होती है।** मोक्ष अवस्था के तर्क संगत व प्रमाणों से युक्त विस्तृत ज्ञान के लिए सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के नवम् समुल्लास को पढ़ना चाहिये जो अत्यल्प मूल्य पर देश भर में या आर्य समाजों से प्राप्त किया जा सकता है। दुःखों से सर्वथा रहित मोक्ष की अवस्था की प्राप्ति के लिये क्या साधन व उपाय करने हैं, अब उस पर विचार करते हैं।

जीवन का एक उद्देश्य भोग व दूसरा अपवर्ग है। भोग के अन्तर्गत हमें अपने प्रारब्ध अर्थात् पूर्व जन्म के पुण्य व पाप कर्मों के फलों को भोगना है। इसके लिये हमें जीवन में आने वाले दुःख को धैर्य व वीरता के साथ सहन करना है।

हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हम सुख में उत्साहित न होकर उसमें सम्भाव बना कर रखें अर्थात् न सुखी हों और न दुःखी। कर्मों को करते हुए हमें निष्काम या आसक्ति रहित कर्म करने होते हैं। हमें व्यक्ति, सामाजिक कार्य व कर्म तो करने हैं, परन्तु फल की इच्छा से रहित होकर करने हैं। ऐसा करने से कर्मों में लिप्त न होने के कारण उसका फल नहीं मिलेगा और वह हमारे कर्मों की पूंजी बन जायेगा जो हमारे अपवर्ग व मोक्ष में सहायक होगी। वेदों एवं वैदिक साहित्य के अनुसार हमें सामान्य कर्मों के साथ पांच नित्य कर्म करने हैं। उनमें प्रथम ब्रह्म यज्ञ अथवा सन्ध्या कर्म है, जो प्रातः व सायं सन्ध्या वेला में किया जाता है। इसमें ईश्वर के गुणों व उपकारों का ध्यान करना होता है। जिसकी विधि महर्षि दयानन्द ने ब्रह्म यज्ञ या सन्ध्या शीर्षक से लिखी है जो पंच महायज्ञ विधि पुस्तक का एक भाग है। दूसरा नित्य कर्म दैनिक यज्ञ, अग्निहोत्र या देव यज्ञ कहलाता है, जिसे भी प्रातः व सायं दोनों समय किया जाता है। इसमें यज्ञ कुण्ड में गोघृत व साकल्प की मन्त्रोच्चार पूर्वक आहुतियां देने का विधान है। इसमें वायु मंडल की शुद्धि के साथ वर्षा जल की भी शुद्धि होकर हमारे कृषि उत्पादों में गुणात्मक परिवर्तन आता है और अनेक दृष्ट व अदृष्ट आध्यात्मिक लाभ प्राप्त

thearyasamaj.org

होते हैं। तीसरा यज्ञ पितृ यज्ञ कहलाता है, जिसमें माता-पिता-आचार्य-परिवार के सभीं वृद्धों व समाज के आदरणीय आयु वृद्द लोगों की सेवा-श्रुशुषा कर उनको सन्तुष्ट रखना होता है। चौथा यज्ञ अतिति यज्ञ है, जिनमें हमें विद्वान् अतिथियों व लोकोपकारी संन्यासियों आदि की सेवा व दान-दक्षिणा आदि से उनका सत्कार करना होता है, जिसमें अज्ञान व अविद्या के नाश, विद्या व ज्ञान के प्रसार, सेवा-सत्कार व परोपकार आदि अच्छे कार्यों को बढ़ावा मिले। अन्तिम पांचवा यज्ञ बलिवैश्व देव यज्ञ, नृयज्ञ, भूत यज्ञ या प्राणी यज्ञ कहलाता है। इसमें पशु, पक्षियों व कीट-पतंगों आदि जीव-जन्तुओं को भोजन कराना होता है। यह यथा सामर्थ्य किया जा सकता है। इन कर्मों को करते हुए अपने जीवन व व्यवहार को पवित्र व रोग-द्वेष, काम, क्रोध आदि से रहित करना होता है। सन्ध्या करते हुए ईश्वर का ध्यान इस स्थिति तक ले जाया जाता है कि उसमें स्थिरता बने और इसकी परिणिति समाधि के रुप में हो। समाधि क्या है ? -शरीर की सभी इन्द्रियां एक प्रकार से विश्राम अवस्था में रहकर जीवात्मा ईश्वर में मग्न होकर दोनों प्रायः एकाकार हो जाते हैं। समाधि के दो भेद होते हैं एक सम्प्रज्ञात व दूसरी असम्प्रज्ञात समाधि। एक में अपने स्वरुप का ज्ञान रहता है व दूसरी प्रवर अवस्था में अपना भी ध्यान नहीं रहता। यह अवस्था ऐसी होती है कि ईश्वर व जीवात्मा दोनों परस्पर भिन्न होकर भी जीवात्मा कह उठता है - मैं ब्रह्म में हूँ, अहं ब्रह्मास्मि अर्थात् ब्रह्म से मेरी साक्षात् भेंट हुई है। सन्ध्या व ध्यान के विस्तृत अध्ययन के लिए महर्षि पतंजलि के योग दर्शन का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। योगदर्शन को जानने के लिए अनेक आर्य विद्वानों के भाष्य उपलब्ध है।

मुण्डको उपनिषद् (८/४०) में समाधि का फल बताते हुए कहा गया है कि **"भिद्यते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे ॥"** अर्थात् समाधि अवस्था में ईश्वर का साक्षात्कार होने पर हृदय में विद्यमान सब संशयों की गांठे खुल या टूट जाती है, जिससे सभी सन्देह अर्थात् संशय नष्ट हो जाते हैं। इसके साथ ब्रह्मज्ञानी उपासक योगी के सब कर्म भी क्षीण हो जाते हैं। हम समझते हैं कि प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति को अपने जीवन में यह अवस्था प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिये। समाधि का सिद्ध होना हमारे शास्त्रकारों के अनुसार मोक्ष, मुक्ति या सर्व दुःखों से निवृत्ति का द्वार है।

आत्मा के संबंध में हम यह भी कहना चाहते हैं कि गीता के दूसरे अध्याय के २३ वें श्लोक में कहा गया है कि **"नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः। न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥"** अर्थात् इस शरीर के स्वामीं जीवात्मा को शस्त्र काट नहीं सकते। आग जला नहीं सकती। पानी गला नहीं सकता तथा वायु जीवात्मा को सुख नहीं सकती। ऐसा हमारा आत्मा है अर्थात् हम है। यह हमारा परिचय है। धन के होने व न होने से आत्मा को कोई विशेष लाभ या हानि नहीं होती। यदि हमने बहुतं धन कमा लिया व आत्म-ज्ञान अथवा आत्म-ईश्वर साक्षात्कार नहीं किया तो समझिये हमने सर्वस्व खो दिया और यदि हमने धन कुछ कम व किंचित नहीं कमाया परन्तु हमने अपनी सभी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया, राग-द्वेष, काम व क्रोध को जीत लिया और ईश्वरोपासना आदि कार्यों को करके समाधि अवस्था को सिद्ध कर लिया तो समझिये कि हमने संसार के बड़े से बड़े धनी से अधिक जीवन को सफल किया है। विचार कीजिये और स्वयं निर्णय कीजिए। सही निर्णय ही जीवन को उसके लक्ष्य तक पहुंचा सकेगा। हम यहां यह भी कहना चाहते हैं कि मोक्ष के जिज्ञासु व साधक को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर श्रीकृष्ण तथा महर्षि दयानन्द के जीवनों से प्रेरणा लेनी चाहिये।

इससे पूर्व की हम लेख को विराम दे, हम पाठकों को खाली समय में व नियमित रुप से भी ओ३म् और गायत्री मन्त्र का जप करने का सुझाव देते हैं। जब करते समय इनके अर्थ व इनका भाव मन में उपस्थित रहना चाहिये। जब जितना समय मिले, जप कर लेना चाहिये। इससे मन आध्यात्मिकता के रंग में रंग जाता है। इसके साथ ही यज्ञ व हवन के अतिरिक्त भी ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुतिरानि परासुव आदि ८ मंत्रों का यदा-कदा व खाली समय में अर्थ पूर्वक विचार कर जप कर लिया जाये तो इससे जीवन को आध्यात्मिक बनाने में लाभ मिलता है।

पता : १९६, चक्कूवाला-२, देहरादून-२४८००१

thearyasamaj.org

आर्यवीर दल की स्थापना तथा उसके कार्यों का इतिहास

- खुशहालचन्द्र आर्य

यह लेख मैने स्वामी देवव्रत जी (प्रधान संचालक, सार्वदेशिक आर्यवीर दल) की पुस्तक "सार्वदेशिक आर्यवीर दल" शीर्षक से यह जानकर उद्घृत किया है कि सार्वदेशिक आर्यवीर दल आर्यसमाज का एक सेवाभावी सैनिक संगठन है, इसकी स्थापना व कार्यों की जानकारी प्रत्येक आर्यसमाजी को होनी चाहिए। इस उद्देश्य से यह लेख लिखा है, जो इसी भांति हैं।

धर्मान्ध लोगों द्वारा हमारे नेताओं के बलिदान किये जाने पर उनका प्रतिकार करने के लिए सन् १९२७ ई. में महात्मा हंसराज की अध्यक्षता में दिल्ली में एक विराट महासम्मेलन हुआ। जिसके परिणाम स्वरुप २६ जनवरी १९२९ ई. को आर्य रक्षा समिति के सुदृढ़ अंग के रुप में आर्यवीर दल की स्थापना की गई। उस समितिं के अध्यक्ष महात्मा नारायण स्वामी ने दस हजार आर्यवीर और दस सहस्त्र रुपये एक वर्ष में एकत्रित करने की प्रतिज्ञा की। आर्यों में इतना अधिक उत्साह था कि कुछ ही महिनों में ये दोनों प्रतिज्ञा पूरी हो गई।

इसी मध्य महाराज राजपाल का लाहौर में धर्मान्ध लोगों द्वारा वध कर दिया गया। इन्हीं परिस्थितियों में महात्मा नारायण स्वामी की अध्यक्षता में सन् १९३१ ई. में दूसरे आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें आर्यवीर दल की शखा प्रत्येक प्रान्त, नगर और आर्यसमाजों में स्थापित करने का आदेश किया गया, जिसमें आर्यवीर दल के नियमित संचालन के लिए हलिष्ट आर्यवीरों क्रो अन्य स्थानों पर प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। सर्वत्र क्षात्रधर्म का प्रचार-प्रसार होने से आर्य नेताओं पर होने वाले आक्रमण रुक गये। सिंहों की दहाड़ सुनकर गीदड़ मांदों में जा छिपे। हिन्दू एवं आर्यजनों के उत्सव, मेले, शोभायात्रा निर्विघ्न सम्पन्न होने लगे।

सारे देश में स्वतन्त्रता संग्राम का बिगुल बजा हुआ था। करो या मरो महात्मा गान्धी के इस उद्घोष से देश के नवयुवकों का खून खौल उठा। विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, रेल की पटरियों को उखाड़ना, टेलीफोन के खम्बों को उखाड़ना और डाकखाने तथा सरकारी कार्यालयों को अग्नि के अर्पण करना आदि अभियान सर्वत्र जोर पकड़ गया। ऐसे अवसर पर आर्यवीर कब चुप बैठने वाले थे। शिविर समाप्त होने पर बहुत से आर्यवीर इस संग्राम में कूद पड़े। तब से लेकर हैदराबाद रियासत के भारत में विलय होने तक का इतिहास आर्यवीरों के त्याग, बलिदान एवं शौर्य से भरा पड़ा। धीरे-धीड़े पेशावर जम्मू, कोहाट से कलकत्ता तक आर्यवीर दल का जाल सा बिछ गया। इसके कार्यों को दो भागों में बांटा जा सकता है -

(१) सुरक्षा :- दिल्ली आर्यवीर दल सन १९२७ ई. या इसके आस-पास मुस्लिम गुण्डों से हिन्दुओं की रक्षा, गढ़मुक्तेश्वर तथा यमुना के घाटों पर, मेलों के अवसर पर जनता की सेवा, सहायता और सुरक्षा का प्रशंसनीय कार्य किया जिससे इसकी उपयोगिता सभी को प्रतीत हो गई।

सन १९४६ ई. में पश्चिमी पंजाब में हजारा, रावलपिण्डी तथा जेहलम जिलों में, जहां पर मुस्लिम संख्या अधिक थी, हिन्दुओं पर भयानक अत्याचार हुए। सैकड़ों स्त्रियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिए कुओं में छलांग लगाई। सैकड़ों युवक वीरतापूर्वक लड़ते हुए शहीद हुए। उस समय रावलपिण्डी, नौथेरा तथा अन्य स्थानों के आर्यवीरों ने अपनी जानपर खेलकर हिन्दुओं की रक्षा व सेवा की।

भारत की स्वाधीनता से पूर्व ही सीमा प्रान्त की हिन्दू जनता को जीवन-मरण के संघर्ष से गुजरना पड़ा। पूर्वी बंगाल के नोआखली जिले में सेहरावर्दी के संकेत से मुस्लिम गुण्डे बंगाल के हिन्दुओं का निर्मम संहार कर रहे थे।

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा द्वारा आदेश मिला कि २०० मौत से खेलने वाले आर्यवीरों का दल पूर्वी बंगाल भेजा जाए। अलवर के दल को सैनिक भेजने का आदेश हुआ । सभा प्रधान के सामने एक सहस्त्र आर्यवीर खरे कर दिये गये कि इनमें से किन्हीं २०० का चयन कर लें। प्रत्येक आर्यवीर जाने के लिए आग्रह कर रहा था । श्री ओमप्रकाश जी त्यागी के नेतृत्व में आर्यवीर नोआखली के लिए रवाना हुए। वहां जाकर रेल्वे स्टेशन से उतरकर प्रभावित क्षेत्र में अपना शिविर लगाने से पूर्व बम विस्फोट किया। गुण्डों को यह समझते देर न लगी कि यह घटना कुछ और संकेत कर रही है। उनकी हिम्मत उधर देखने की भी नहीं हुई।

पास में ही श्रीमती सुचेता कृपलानी के नेतृत्व में कांग्रेस का शिविर लगा हुआ था। इसके कार्यकर्ता अहिंसा का मिथ्या राग अलापते और आर्यवीर दल को गालियां देते थकते न थे। एक दिन मुस्लिम गुण्डों ने कांग्रेस शिविर पर धावा बोल दिया और सुचेता जी के बालों को पकड़ कर घसीटते हुए अपने क्षेत्र की ओर ले जाने लगे। सूचना पाकर आर्यवीर दल के सेनापति श्री ओमप्रकाश जी सशस्त्र आर्यवीरों के साथ गुण्डों पर टूट पड़े और उनका सारा नशा फाड़ दिया। सुचेता जी खुले बाल धूल लिप्त, भूमि पर पड़ी थी। श्री ओमप्रकाश जी को सामने खड़ा देख आंखों में पानी भरकर बोली, "भैया ! तुम आ गये।" प्रत्युतर में इन्होने कहा कि गुण्डों द्वारा बहन का अपमान होता देखकर महर्षि दयानन्द के सैनिक कैसे चुप रह सकते हैं ? एसे ही अनेक अवसरों पर अपनी जान हथेली पर रखकर आर्यवीरों ने न जाने कितनी माताओं-बहिनों की जान बचाई।

पूर्वी बंगाल से आये हिन्दू शरणार्थियों का शिविर सीमा के पास लगा हुआ था। पाकिस्तान की सीमा केवल १०० मीटर दूर थी। ऐसी ही घटना जयनगर के समीप हुई। पाकिस्तान की सीमा को पार करके अंसार गुण्डों ने भारतीय चौकी पर आक्रमण करके अपना झण्डा गाड़ने का प्रयास किया। इस समय शिविर में भारतीय पुलिस के केवल चार सिपाही थे, जिनमें से एक रोगी था। श्री ओमप्रकाश जी सेनापति आर्यवीर दल उस शिविर को सम्भाल रहे थे। दोनों ओर से कुछ घण्टों तक गोलियां चली। अपनी दाल गलती न देखकर अंसार गुण्डे मैदान छोड़कर भाग खड़े हुए। उनसे छीना पाकिस्तानी झण्डा अब भी आर्यवीर दल के शौर्य की याद दिला रहा है।

हैदराबाद के मुक्ति संग्राम का प्रारम्भ तो आर्यवीरों ने ही किया था। तीन आर्यवीरों ने निजाम की कार पर बम फेंकने की योजना बनाई। योजनानुसार बम फेंका गया, परन्तु वह फटा नहीं। इससे पहले कि दूसरी कार्यवाही की जाए, निजाम के अंगरक्षकों ने नारायणराव को दबोच लिया। उसे भयंकर यातनाएं दी गई, परन्तु उसने साथियों के नाम नहीं बतलाए।

उमरी कस्बे में हैदराबाद के निजाम का बैंक था। आर्यवीरों ने योजनाबद्ध विधि से उसमें से ३० लाख रुपये लूटकर सरदार पटेल के सुपुर्द कर दिये। इसी भांति उद्‌गीर के भाई श्यामलाल धारूर, जिला बीड़ के नवयुवक काशीराम, हुमनाबाद के शहीद वेदप्रकाश, श्रीकृष्ण राव जी और अन्य बहुत से आर्यवीरों ने स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपने जीवन की आहुतियां देकर हैदराबाद को मुक्त कराने का श्रेय प्राप्त किया। हैदराबाद में पुलिस एक्शन के समय सारा कार्यभार आर्यवीरों पर ही था। इसलिए सरदार पटेल को कहना पड़ा कि यदि आर्य समाज का सहयोग न होता तो सरकार को हैदराबाद को विजय करना कठिन होता। वस्तुतः इस रियासत की विजय का सम्पूर्ण श्रेय आर्यवीरों को ही जाता है।

(२) सेवा कार्य :- सेवा कार्य वही कर सकता है, जो शरीर से बलिष्ठ तथा अहंकार से शून्य और माननीय गुणों से युक्त हो। आर्यवीर इस कार्य में भी पीछे नहीं रहे। कुछ प्रसंग इसके ज्वलन्त उदाहरण है। सन् १९३६ ई. में मध्य भारत में दुर्भिक्षु पड़ा। सार्वदेशिक सभा ने आर्यवीरों के निरीक्षण में रतलाम, उज्जैन, झाबुआ, दोहद व मेघनगर में सहायता केन्द्र खोले। यह कार्य ड़ेढ़ मास तक चला। सन् १९४२-४३ ई. में बंगाल में भयंकर अकाल पड़ा, जिसमें ४५ लाख लोग मौत के मुख में चले गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में श्री खुशहालचन्द्र (आनन्द स्वामी) की अध्यक्षता में आर्यवीरों को सहायतार्त भेजा गया। आर्यवीरों ने लाखों लोगों में भोजन, वस्त्र और औषधि वितरण का कार्य किया। इसी भांति देश विभाजन के समय अनेक

thearyasamaj.org

सहायता शिविरों का संचालन किया। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् १९५० ई. में असम की बाढ़, केकड़ी (राजस्थान) और मोरवी (गुजरात) के जल पलायन में भी आर्यवीरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसी भांति उत्तरकाशी एवं गुजरात के भूकम्प और उड़ीसा के तूफान में भी आर्यवीरों ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

आर्यवीर दल का इतिहास त्याग, बलिदान, देशभक्ति, सेवा और शौर्य गाथा से परिपूर्ण है। जिन्होंने धर्म एवं राष्ट्र रक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण किया। उन परिचित एवं अनाम शहीदों को हमारा शत्-शत् प्रणाम।

मुझे यहां बड़े दुःख के साथ लिखना पड़ रहा है कि आर्यवीरों ने इतना अधिक काम इसलिए कर पाये कि उस समय आर्यसमाज संगठित थी। एक सार्वदेशिक योग्य, त्यागी, तपस्वी, निःस्वार्थी, परोपकारी, समर्पित आर्यजनों की थी। तभी उस समय आर्यसमाज की धाक थी। सरकार और जनता आर्यसमाज को सम्मान व श्रद्धा की दृष्टि से देखती थी। आज की भांति यदि तीन सार्वदेशिक स्वार्थी और पद-लोलुप जनों की उस समय भी होती तो कोई काम रक्षा व सेवा का नहीं कर पाती। इसलिये आर्यसमाज को यदि वेद प्रचार व राष्ट्र रक्षा का कार्य करना है, तो उसे पुनः संगठित होना पड़ेगा और तीन सार्वदेशिकों की जगह एक सार्वदेशिक अच्छे आर्यजनों की बनानी पड़ेगी। अन्यथा आर्यसमाज अवनति को ही प्राप्त होता रहेगा।

पता : गोविन्दराम आर्य अण्ड संस, १८०, महात्मा गांधी रोड (दो तल्ला) कोलकाता-७०००७

जीवन-दर्शन

पहेली तो न बुझवाएं

★ श्री ओमप्रकाश बजाज

परसो हमारे विवाह की वर्षगांठ थी, मित्रों संबंधियों प्रियजनों के ढेरों बधाईकार्ड आए, बहुत अच्छा लगा, मगर एक कार्ड ऐसा भी था जिसमें भेजने वाले ने अपना नाम पता लिखने की बजाय अंदर और बाहर लिखा था 'गैस' (बूझो तो जाने)। शायद इंसानी फितरत है। हमारा सारा ध्यान बाकी हर तरफ से हट कर इसी कार्ड पर ही केन्द्रित हो गया कि आखिर किस ने भेजा है यह कार्ड। कार्ड सुन्दर था, कीमती था, उसे बार-बार उल्टा-पल्टा डाकखाने की धुंधली मुहर को बांधने की हर सम्भव चेष्टा की, जिन जिन के कार्ड नहीं आए थे उन सबसे भी घुमा फिरा कर पूछ डाला. दिमाग के घोड़े सरपट दौड़ाए मगर सब बेसूद हार गए. झंझलाहट भी हुई कि इन सज्जन ने किस जन्म का यह बदला चुकाया कि खुशी और उत्साह के अवसर पर हमें बेकार की इस मानसिक उलझन में डाल कर सारा मजा किरकिरा कर दिया।

यूं यह पहला अवसर नहीं था, कुछ महीने पूर्व हमारी श्रीमती जी के जन्म दिन पर भी ऐसा ही एक कार्ड आया था (शायद इन्ही महाशय का ही रहा हो)। तब भी हमने बहुत सिर मारा था। हर सम्भव प्रयास किया था प्रेषक की पहचान कर लेने का, मगर विफल रहे। तब इसी चक्कर में न जाने कहां-कहां फोन करने में हमारा अच्छा खासा बिल बन गया था।

नव वर्ष और दीवाली आदि त्योहारों के अवसर पर भी कई कार्ड ऐसे आते हैं जिन पर भेजने वाले अपने हस्ताक्षर इस प्रकार गोलमोल ढंग से कर देते हैं जिन्हें पढ़ पाना अथवा पहचान पाना सम्भव नहीं हो पाता। ऐसे में कार्ड पाने वाले को बधाई और शुभकामनाओं का प्रतिदान (रेसीप्रीकेट) न कर पाने का असंतोष बना रह जाता है।

जब आप एक अच्छी भावना से किसी अपने प्रियजन को शुभकामना संदेश भेज ही रहे हैं तो अपना नाम पता भी स्पष्ट अक्षरों में अवश्य लिखें। अपनी पहचान छुपा कर उस बेचारे को अनबूझ पहेली बूझने पर विवश न करें।

पता - बी-२, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर - ४८२००१ (म.प्र.)

thearyasamaj.org

विवेचनात्मक

जीव अमर हैं तो हत्या या आत्महत्या, पाप अपराध क्यों हैं ?

- इन्द्रजीत 'देव'

शरीर आत्मा का घर है। यदि आप किसी का घर तोड़ दें तो यह पाप ही माना जाएगा। गीता में शरीर को आत्मा का वस्त्र कहा गया है। किसी के वस्त्र फाड़ने वाले को अपराधी माना ही जाएगा।

जीवन क्या है ? शरीर व आत्मा का एक होना व रहना। मृत्यु क्या है ? शरीर व आत्मा का पृथक हो जाना । यह मृत्यु तीन प्रकारों में से किसी एक प्रकार से हो सकती है। ये तीन प्रकार है -

१. हत्या - जब कोई दूसरा व्यक्ति किसी साधन से एक प्राणी को मारता है तो यह हत्या कहलाती है।

२. आत्महत्या - जब कोई व्यक्ति दुःख निराशा या असफलता की अवस्था में किसी साधन द्वारा अपनी हत्या कर लेता है तो यह आत्महत्या कहलाती है।

३. मृत्यु - बीमारी, जरावस्था के कारण जब एक प्राणी का आत्मा शरीर-त्याग करता है तो इसे मृत्यु कहते हैं।

किसी भी प्रकार से हो, आत्मा व शरीर का पृथक-पृथक होना अनिवार्य है। उपरोक्त तीसरे प्रकार की मृत्यु होने पर कोई अपराध नहीं माना जाता। किसी प्रकार का पाप भी स्वीकार नहीं किया जाता। यह स्वाभाविक मृत्यु मानी जाती है परन्तु उपरोक्त प्रथम व द्वितीय प्रकारों की मृत्यु करने पर स्थिति भिन्न होती है। हत्या करने वाले के विरुद्ध केस दायर किया जाता है। यदि वह तुरन्त पकड़ा जाए तो ठीक है अन्यथा उसको पकड़ने के सभी सम्भव उपाय किए जाते हैं। उसे अपराधी सिद्ध करके उचित दण्ड दिलाने के सभी प्रयत्न भी किए जाते हैं। आत्महत्या करने वाले व्यक्ति को यदि अपने उद्देश्य में सफलता मिल जाती है अर्थात् वह शरीर व आत्मा को पृथक-पृथक करने में सफल हो जाता है तो फिर उसके विरुद्ध केस बनता है तो परन्तु केस किसके विरुद्ध दायर करें ? अब तो वह प्राणी चला गया है। जिसने यह कृत्य किया था। अतः उसके विरुद्ध कुछ नहीं हो सकता परन्तु उसे पापी व अपराधी तो माना ही जाता है। अपराध व पाप में क्या भेद है ? एक ही कार्य के दो नाम क्यों है ? उत्तर में निवेदन यह है कि राजनैतिक संविधान की दृष्टि से जो कार्य गलत है, वह अपराध कहलाता है जबकि ईश्वरीय आज्ञानुसार जो कार्य गलत है, उसे पाप कहा जाता है। हत्या और आत्महत्या ये दोनों ही ईश्वरीय व राजनैतिकं दृष्टिकोणों से गलत कार्य है, अतः इनके लिए हमने अपराध और पाप, इन दोनों शब्दों का प्रयोग किया है। इस विषय में और अधिक विचार करने से पूर्व आत्मा पर तनिक विचार करना अनिवार्य प्रतीत होता है, क्योंकि किसी भी प्रकार से मृत्यु हो, आत्मा शरीर से पृथक होगा ही। आत्मा के विषय में यजुर्वेद (१०।४८।५) में कहा गया है -

अहमिन्द्रो न पराजिग्य इद्धनं न मृत्यवेऽवतस्थे कदाचन।

अर्थात् मैं आत्मा हूँ, मैं ऐश्वर्यवान् हूँ। मैं कभी भी मृत्यु को प्राप्त नहीं होता। मेरे धन को कोई भी छीन नहीं सकता, चुरा नहीं सकता।

आत्मा का यह धन क्या है ? कर्मेन्द्रियां, ज्ञानेन्द्रियां, मन, बुद्धि शरीर के विभिन्न अवयव-ये आत्मा के धन हैं। इन पर जीवात्मा का अधिकार है। यह धन आत्मा को बार-बार मिलेगा। इस धन पर जीव का आरक्षण (कर्मफल के अनुसार) रहता है। जीवात्मा मृत्यु को चुनौती देता है। "ओ मृत्यु ! तू क्या कर सकती ? मुझे तो मार नहीं सकती। हाँ, इस एक जन्म के शरीर को मुझ से छीन सकती है, परन्तु ऐसे शरीर मुझे बार-बार मिले हैं, पूर्वजन्मों में तथा आगे भी बार-बार मिलेंगे। जब शरीर मिलेंगे तो इनके अवयव भी मिलेंगे। अतः मेरे धन को तू नहीं छीन सकती। इस धन पर मेरा अधिकार है। हाँ, अधिकतम तू मुझ से यह मेरा एक वर्तमान शरीर ही छीन सकती है परन्तु ऐसे असंख्य शरीरों का मैने पूर्वजन्मों में भोग किया है तथा असंख्य शरीरों का भोग मैं आगामी जन्मों में करूंगा।" यजुर्वेद के ४०वें अध्याय में आत्मा व शरीर के विषय में कहा गया है - **वायुरनिलं अमृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्**। अर्थात् यह

thearyasamaj.org

आत्मा अमर है - 'अमृत' । अर्थात् अ+ मृत, जो मरता नहीं है जबकि इस शरीर का परिणाम व अंजाम भस्म होता ही है। इसी आधार पर बाद में श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा था -

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ।।
(गीता २।२३)

अर्थात् यह आत्मा शस्त्रों से काटा नहीं जाता, अग्नि से जलाया नहीं जा सकता, पानी इसे गला नहीं सकता, हवा से यह सुखाया नहीं जा सकता, इसकी हत्या नहीं की जा सकती। यह आत्मा असहनीय है, अवध्य है।

जब आत्मा असहनीय, अवध्य, अमृत व शाश्वत है तो स्पष्ट है कि आत्मा की हत्या हो ही नहीं सकती फिर जीवित व्यक्ति को मार देने वाले हत्यारे को घृणा की दृष्टि से क्यों देखा जाता है ? उसे क्यों अपराधी य पापी माना जाता है ? क्यों उसे दण्ड दिया जाता है ? आत्महत्या करने में सफल रहने वाले व्यक्ति के विरुद्ध कुछ भी कार्यवाही करना सम्भव नहीं होता उसे दण्ड भी नहीं दिया जा सकता, परन्तु उसका कार्य अपराध व पाप कर्म तो माना ही जाएगा।

इस सम्बन्ध में यदि हमें शरीर व आत्मा का परस्पर सम्बन्ध समझ में आ जाए तो यह भी समझ में आ जाएगा कि हत्या और आत्महत्या अपराध व पाप क्यों है। शरीर व आत्मा का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। आत्मा शरीर के बिना निष्क्रिय है व शरीर, आत्मा के बिना व्यर्थ है। सभी कार्य करने का साधन यह शरीर ही है जो जीवात्मा को पिछले जन्मों के कर्मानुसार मिलता है, ईश्वरीय व्यवस्था से। यह इसलिए मिलता है ताकि जीवात्मा पिछले कर्मों का फल भोग सके। मनुष्येत्तर शरीर तो केवल इसी एक उद्देश्य से मिलता है। इसी आधार पर मनुष्येत्तर योनियों को भोग-योनियाँ व मनुष्य शरीर को भोग व कर्म योनियां माना गया है। वैशेषिक दर्शनकार महर्षि कणाद ने इसे **"भोगापवर्गार्थम् दृश्यम् ।"** कहा है । अर्थात् पिछले कर्मों का फल भोगने व मुक्ति-प्राप्ति के लिए यह संसार बना है । यह प्राप्ति हमें शरीर द्वारा उत्तम कर्म करने के फलस्वरुप ही होगी। शरीर के अवयवों के बिना जीवात्मा को तो अपने अस्तित्व का भी भान नहीं होता, नहीं हो सकता। आत्मा के समस्त कार्यों का आधार, आश्रय व साधन शरीर ही है। कहा भी है - **शरीरमाद्यं खलु धर्म-साधनम्**। शरीर से सम्बद्ध होने पर ही आत्मा को ज्ञान, प्रयत्न, इच्छा, द्वेष व सुख-दुःख का आभास होता है जो आत्मा के छः लक्षणों से अभिहित किए गए हैं। न्यायदर्शन में महर्षि गौतम ने (=३।१।५ व ६) में कहा है - **तदभावः सात्मकप्रदाहेऽपि तन्नित्यत्वात्**। अर्थात् नित्य आत्मा का वध नाश नहीं होता अपितु इसके कार्य साधनों का नाश होने से हिंसा होती है, अतः पाप है। **न कार्याश्रयर्त्तुवधात्** । अर्थात् आत्मा के भोगादि के साध देहादि संघात का वध हिंसा रुप पातक है। आत्मा का उच्छेद हिंसा नहीं क्योंकि वह नित्य है, शाश्वत है, अमर है, उसका उच्छेद असम्भव है। आत्मा के फल भोगने में अवरोध पैदा करना अर्थात् शरीर का उच्छेद पाप है। ईश्वर की न्याय-व्यवस्था में बाधा उपस्थित करना पातक है। शरीर आत्मा का घर है। यदि आप किसी का घर तोड़ दें तो यह पाप ही माना जाएगा। गीता में शरीर को आत्मा का वस्त्र कहा गया है। किसी के वस्त्र फाड़ने वाले को अपराधी माना ही जाएगा।

जब जीव की इस लेख के आरम्भ में कही स्वाभाविक मृत्यु होती है, तब भी शरीर के अवयव अर्थात् आत्मा के साधन निष्क्रिय होते हैं। तब भी तो उस शरीर को चिता में जलाते हैं। क्या तब पाप नहीं लगता ? यह एक प्रतिप्रश्न है। इसका स्पष्ट व सरल उत्तर यह है कि जिस जीव के लिए शरीर बना था, वह इसे छोड़ कर चला गया है। उसने अब लौटकर वापस पुनः इस शरीर में आना नहीं है। इस शरीर व इसके साधनों का प्रयोग अब उसने करना नहीं है। अपितु यह धर्म व कर्त्तव्य है क्योंकि **"भस्मान्तं शरीरम्"** ही शरीर की परिणति है। न्यायदर्शन के **"शरीरदाहे पातकाभावात्।"** सूत्र में इसकी पुष्टि उपलब्ध है।

राजनैतिक संविधान की दृष्टि से हत्या या आत्महत्या इसलिए अपराध है क्योंकि व्यक्ति को खिलाने, पढ़ाने, सिखाने व राष्ट्र के अन्य साधन राष्ट्र द्वारा ही उपलब्ध कराए जाते हैं जिनका आधार लेकर ही एक व्यक्ति शक्ति व विद्या प्राप्त करता है। उसके शरीर व बुद्धि आदि पर राष्ट्र का अधिकार है। राष्ट्र की जायदाद और सम्पत्ति का नाश करने का अधिकार किसी नागरिक को नहीं है। अतः किसी की हत्या या आत्महत्या करना राजनैतिक संविधानानुसार अपराध है।

पता : पुरानी सब्जी मण्डी मार्ग, यमुनानगर (हरयाणा)

thearyasamaj.org

'योग' का महत्व

- स्वामी सत्यानन्द सरस्वती 'दर्शनाचार्य'

उपादेयात्मक

सम्माननीय पाठकगण इस लघु लेख में 'योग' शब्द का अर्थ वर्तमान में प्रचलित योगासन व प्राणायाम तक ही नहीं है, अपितु यहाँ सम्पूर्ण योग अर्थात् पतञ्जलि द्वारा निर्दिष्ट अष्टाङ्गयोग से है।

महानुभावों! व्यक्ति अपने जीवन में अनेक विद्यायें पढ़ कर बड़ी-बड़ी उपाधियां प्राप्त कर ले, असीम धन का स्वामी हो जावे, अच्छा व्यवहार कुशल, उत्तम स्वास्थ्य बना अपने कार्यों का सम्पादन भलीभांति करने, यज्ञ आदि करता हुआ बड़ा दानी हो जावे और चाहे कितनी बड़ी तर्किक बुद्धि प्राप्त कर ले तो भी यह आवश्यक नहीं है कि वह राग, द्वेष, काम, क्रोधादि आन्तरिक दोषों से बचकर तनाव मुक्त हो जावे। यदि ये दोष जीवनमें विद्यमान हैं तो उपरोक्त गुणों के होते हुए भी वह व्यक्ति अविद्या ग्रस्त है, वे दुःखी न होवें, यह सम्भव नहीं है। यह व्यक्ति समय आने पर उन विशेष गुणों से वंचित हो सकता है, पतन को प्राप्त हो सकता है। क्योंकि ये विशेषतायें जो उसके जीवन में हैं, वे विवेक के अभाव के कारण किसी प्रयोजन विशेष की सिद्धि तक ही हैं। उन्हें स्थिर एवं स्वाभाविक बनाने के लिए राग-द्वेषादि से रहित होकर सर्वज्ञ ईश्वर से सम्बन्ध बनाना अनिवार्य है। परमपिता परमेश्वर से सम्बन्ध बनाने के लिए एकमात्र साधन 'योग' ही है। क्योंकि प्रकृति रुपी माता अपने पुत्र जीवों को उनके पिता परमात्मा के हवाले नहीं करती। कहा भी है - **पश्यन्नपि न पश्यति शृण्वन्नपि न शृणोति जानन्नपि न जानाति**। प्रतिदिन लोगों को मरते हुए देखते हैं, श्मशान ले जाकर अपने ही हाथों से जलाते हैं, किन्तु कितने हैं जो यह जानते हैं कि एक दिन मेरा भी यही हाल होगा। ये पुत्र कल यहीं रहेंगे, कोई भी साथ नहीं जायेगा। जीव की इस "मूढ़" अवस्था कुमार अवस्था कहलाती है। कुमार=बालक, बालक=अज्ञानी। जब तक व्यक्ति प्रकृति रुपी माता की गोद को पसन्द करता रहेगा अर्थात् प्राकृतिक पदार्थों में खोया रहेगा, तब तक कुमार, बालक मूढ़ एवं अज्ञानी ही रहेगा।

यह प्रकृति रुपी माता जीव को अपनी गोद में छुपाये रहती है। पिता अर्थात् परमात्मा के पास जाने से रोकती है। जब विवेक जागृत हो जाता है अर्थात् कुमारपन या बालकपन हट जाता है अर्थात् युवा हो जाता है तो जैसे बालक बड़ा हो जाने पर माता की गोद में नहीं रहता बल्कि पिता के साथ हो जाता है। ऐसे ही विवेक हो जाने पर प्रकृति से राग हट जाता है और परमात्मा में लगन लगा लेता है। इसलिये कुमारपन को हटाना बहुत जरुरी है। कुमारपन अर्थात् अज्ञान को हटाने के लिये ज्ञानस्वरुप की उपासना-भक्ति ही एकमात्र साधन है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने ईश्वर उपासना करने पर बहुत जोर दिया है। उन्होंने अपने ग्रन्थों में जहां-जहां भी ईश्वर उपासना को कहा है वहां अन्य की उपासना न करने का निर्देश भी दिया है। यह अन्य क्या है? अन्य का अर्थ है **"व्यक्ति और प्रकृति"**। ईश्वर को छोड़कर इनमें दिन भर-जीवन भर खोया रहना, यह अन्य की उपासना है। इसी का उन्होंने निषेध किया है। क्योंकि प्राकृतिक पदार्थों से मिलने वाले सुखों में चार प्रकार के दुःख मिले रहते हैं, वे शुद्ध एवं सदा रहने वाले सुख नहीं हैं। शुद्ध व नित्य सुख तो ईश्वर के सान्निध्य में ही है। ईश्वर प्राप्ति का साधन म. पतञ्जलि जी ने **'योग'** को बतलाया है और योग की परिभाषा उन्होने इस प्रकार की है **"योगश्चित वृति निरोधः"**। अर्थात् समस्त दुःखों से निवृत्ति और शुद्ध सुख की प्राप्ति हेतु मन में होने वाली सांसारिक उधेड़-बुन

thearyasamaj.org

को रोक देना ही साधन है। इस आध्यात्मिक जीवन को जीने की एक शैली है। ईश्वर ने जहां जीवन दिया है वहीं सुखी रहने की सामग्री भी दी है और साथ ही उसको प्रयोग करने का ज्ञान भी दिया है।

ईश्वर कहता है कि यह जो कुछ मैंने तुम्हें दिया है, इसे त्याग भाव से प्रयोग करना, इस पर अपना स्वामित्व नहीं बनाना। यदि इनमें अपनत्व रखोगे तो एक दिन इससे अवश्य वियोग होगा। **"श्येनवत् सुखी दुःखी त्याग वियोगाभ्याम्"** क. कपिल जी कहते हैं कि त्याग भाव से प्रयोग करने से सुख और त्याग भाव नहीं रखते हुए स्वामित्व बनाने से वियोग होने पर दुःख होगा। अध्यात्मिक जीवन यम-नियम के आचरण करने से सफल होता है। इस जीवन शैली को वर्ण आश्रम की व्यवस्था के अनुसार जीना पड़ता है। जीवन का चौथा भाग घर में और तीन चौथाई भाग घर से बाहर बिताने का विधान है। अर्थात् ब्रह्मचर्य - वानप्रस्थ और संन्यास में घर से बाहर और गृहस्थ काल केवल घर में रहने के लिये है।

अतः जो व्यक्ति घर में ही लिप्त रहता है, त्याग नहीं करता वह कितना ही दानी, याज्ञिक, परोपकारी, विद्वानरहे, उसे त्याग या वैराग्य नहीं हो सकता। वह राग द्वेष से युक्त रहेगा ही और उसे ईश्वर सानिध्य प्राप्त नहीं हो सकता। समाधि नहीं लग सकती। इसलिये बस एक ही मार्ग है शुद्ध आध्यात्मिक जीवन शैली को अपना कर जीवन लक्ष्य समस्त दुःखों से निवृति और शुद्ध शाश्वत सुख को प्राप्त करें। संसार के प्रवाह से बचने का और कोई दूसरा सहज उपाय नहीं है।

पता : परममित्र आर्ष विद्यापीठ एवं योग साधना केन्द्र, गेरवानी, जिला-रायगढ़ (छ.ग.)

यौन नहीं 'योग' शिक्षा जरुरी

*योग हमारी सभ्यता का प्राचीन अंग है। स्वामी रामदेव ने पतंजलि योगपीठ के माध्यम से देश-विदेश में योग प्रचार कर लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरुक किया। भारत की प्राचीन विद्या योग आज पूरे विश्व में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी है। योग से अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा संभव है। स्कूलों और कालेजों में आज यौन शिक्षा नहीं योग शिक्षा की जरुरत है। शिक्षण संस्थानों में योग को अनिवार्य विषय के रुप में लागू कर दिया जाय तो एड्स जैसी असाध्य बीमारी पर काबू पाया जा सकता है। योग से संयमित युवा वर्ग कामांध नहीं हो सकता इसलिए रोगों से संक्रमित नहीं हो सकता। एड्स का इलाज केवल योग और प्राणायाम है। योग और प्राणायाम से व्यक्ति संयमी बनता है एड्स को रोकने के लिए बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है लेकिन सफलता नहीं मिल रही है। '**योग**' करने मात्र से ही मानव एड्स जैसी असाध्य बीमारी से मुक्ति पा सकता है। '**योग**' में जो शक्ति है वह किसी दवा में नहीं है। शिक्षा में यौन शिक्षा नहीं, योग शिक्षा अनिवार्य कर हरियाणा सरकार ने क्रांतिकारी निर्णय लिया है।*

*योग शिक्षा से विद्यार्थी तनावमुक्त होकर शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे। आस्तिक व्यक्ति कभी भयभीत और शोकग्रस्त नहीं होता वह सदैव ईश्वर के प्रति समर्पित रहता है। भगवान की शरण में जाने के बाद मनुष्य के सभी पाप नष्ट हो जाते हैं। सारे रोगों का मुख्य कारण मानसिक तनाव और नकारात्मक सोच है। भक्ति करने से मानव तनावमुक्त हो सकता है। वैश्विक-शांति का उपाय मात्र 'योग' है। स्वामी जी महाराज का मानना है कि स्कूलों में यौन नहीं योग शिक्षा आवश्यक कर दी जाय क्योंकि यौन शिक्षा, सुरक्षित यौन संबंध के नाम पर यदि इसको एक बार स्वीकृति मिल गयी तो समाज में खुली अराजकता व्याप्त हो जायेगी। यदि देश के नैतिक मूल्यों को बचाना है तो योग शिक्षा सभी विद्यालयों में अनिवार्य करनी होगी। इससे बच्चों का स्वास्थ्य सुधरेगा वहीं बीमारियाँ भी पास नहीं फटकेगी। '**योग**' के आगे '**भोग**' टिक ही नहीं सकता यदि एक बार यौन शिक्षा शुरु कर दी गयी तो स्थिति अनियंत्रित हो जायेगी। यह वह समय है जब योग की महत्ता, लाभ को स्वीकार करते हुए उसे पुनःस्थापित कर मानव का कल्याण करें।*

- लोकनाथ शास्त्री, धर्माचार्य, मठपारा, दुर्ग

thearyasamaj.org

गवेषणात्मक प्रतिदिन यज्ञ करते हुए भी प्रायः लोगों को लाभ क्यों नहीं होता ?

– आचार्य आर्यनरेश,
वैदिक गवेषक

'महर्षि देव दयानन्द सरस्वती' वर्तमान युग के प्रथम ऐसे वैज्ञानिक थे, जिन्होने आज से लगभग १२५ वर्ष पूर्व यज्ञ हवन को वेद की छाया में संसार के सभी जड़ व चेतन पदार्थों हेतु सर्वाधिक लाभकारी वैज्ञानिक सुकर्म कहा। स्व. कालजयी क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ३ समु. में यज्ञ पर शंकर के उत्तर में लिखते हैं कि यदि तुम **'पदार्थ विद्या'** जानते तो कभी यज्ञ का विरोध न करते। पदार्थ विद्या से अभिप्राय उन रासायनिक क्रियाओं से है जिसका अध्ययन कैमिस्ट्री इक्वेशनों के द्वारा किया जाता है। कहने का मूल अभिप्राय यह है कि **'वैदिक यज्ञ'** एक वैज्ञानिक क्रिया है। इसके द्वारा पूर्ण-लाभ अथवा शीघ्र लाभ तभी हो सकता है, जब हम इसे ठीक उसी प्रकार से करें जैसे कि देव दयानन्दादि ऋषियों ने वेद व शास्त्र के अनुसार इसका निर्देश किया है। यदि हम इसे अपनी मनचाही इच्छा से एवं मनचाहे साधनों एवं विधि से करते हैं तो इससे हानि होती है, लाभ कम होता है अथवा होता ही नहीं। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित है (१) सबसे बड़ी त्रुटि गलत माप ऋषि आज्ञा से विरुद्ध हवनकुण्ड का चयन। देव दयानन्द सरस्वती संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश में हवन कुण्ड का परिमाण लिखते हुए संकते करते हैं कि जितना ऊपर से चौड़ा, उतना ही गहरा एवं उस चौड़ाई से चौथाई भाग पेदे वाला। अर्थात् यदि ऊपर से १२" इंच है, तो गहरा १२" व पेदें में ३"x ३" होना चाहिए। जबकि कुछ पौराणिक लोगों की नकल या समिधाओं को ठीक करने से बचने हेतु गलत कुण्ड का परिमाण लगभग होता है : 12x6x4 तर्क विज्ञान शील बुद्धिजीवी आर्यों को अपना कोई भी कार्य शास्त्र विरुद्ध न करना चाहिए। कुण्ड जितनी अच्छी धातु का होगा उतना अधिक लाभ होगा। पहले प्रकार के ऋषि निर्दिष्ट कुण्ड में जड़ीबूटियों को वाष्प रुप में लाने हेतु ज्वलन क्रिया में भीतर ६००° से ऊपर १३००° तक तापमान पहुंच जाता है। जिससे प्रत्येक पदार्थ कम्बश्चन क्रिया द्वारा उचित लाभ पहुंचाता है। ऐसे कुण्ड में लाभ पूर्ण लेने हेतु छिद्र करने की कभी भूल न करनी चाहिए। छिद्र करने से ताप मान कम हो सकता है तथा कुण्ड शीघ्र टूट जाता है एवं सामग्री व घृत बाहर भी गिर जाते हैं। जो लोग जलने की सुविधा हेतु छिद्र करने की बात करते हैं वह नितान्त तर्कहीन व गलत है, क्योंकि जब कुण्ड घरों व समाज भवनों की यज्ञशालाओं में धरती के भीतर बनता है तब भी तो अग्नि बहुत अच्छी प्रकार से जलती है। अपितु धरती वाला कुण्ड अधिक लाभकारी होता है, क्योंकि उसमें आहुत की गई विभिन्न रोगनाशक प्राकृतिक जड़ी-बूटियां सूक्ष्म होकर घर के नीचे वाली भूमि को भी स्वस्थ रखती है, जिससे इससे दीमक आदि का भी भय नहीं रहता। आजकल दीमक का उपचार करने वाले जहां जानलेवा रासायनिक औषधियों को खिड़की, किवाड़ों व अलमारियों में लगाते हैं वहां इसके साथ-साथ भवन के चारों ओर की धरती में भी लगाते हैं। यदि आप के पास अपना घर है अथवा बनाने जा रहे हैं तो यज्ञ कुण्ड धरती में ही तीन मेखला वाला बनायें। पक्का हवन कुण्ड आपकी पक्की ईश्वर वेद व ऋषि भक्ति का भी परिचायक है। यह आपके परिवार को आपके पश्चात् भी पक्का ईश-वेद भक्त बनने की व दैनिक यज्ञ के करने की

thearyasamaj.org

प्रेरणा देकर 'आर्य' बनाए रखेगा। यदि आपके पीछे पुत्र-पुत्रवधु व पौत्र आलस्यवशात् छोड़ भी देंगे तो आने वाले आर्यातिथिजन उन्हें आप द्वारा बनाए गए कुण्ड को स्मरण करवा कर पुनः परिवार सहित मिलकर संध्या हवन व वेदपाठ करने की प्रेरणा देगा। बुद्धि जीवी तर्कशील आर्यो ! जब घर-भवन में अनेक कमरे सोने-खाने एवं गप लगाने के (ड्राइंग रुम) जैसे पक्के तो फिर भगवान सर्वश्रेष्ठ यज्ञ का स्थान कच्चा क्यों ? वह घर ही नहीं जहां प्रतिदिन होम नहीं होता। मेखला का माप भी ऋषि ने दिया है। जब हमने यजुर्वेद के १८ अ. पर सर्च करवाई तो आईआईटी दिल्ली के वैज्ञानिक ने सर्वप्रथम यही पूछा कि आपका कुण्ड कैसा था, जब मैने 12x12x3 या 1x1x1/4 कहा तो वे कहने लगे बिल्कुल ठीक। इससे मिलता है पूर्ण लाभ।

पता: उद्गीथ साधना स्थली, आर्य शिखर, वेद सदन, ओमवन महर्षि दयानन्द मार्ग, हिमाचल प्रदेश-१७३१०१

कड़वा सच

- माँ-बाप के आँखों में दो बार आंसू आते हैं लड़की घर छोड़े तब... और लड़का मुंह मोड़े तब।
- जिस दिन तुम्हारे कारण माँ-बाप की आँखों में आँसू आते है, याद रखना.... उस दिन, तुम्हारा किया सारा धर्म.... आँसू में बह जाता है।
- जब छोटा था, माँ की शय्या गीली रखता था, अब बड़ा हुआ तो माँ की आंखें गीली करता है। हे पुत्र ! तुझे माँ को गीलेपन में रखने की शायद आदत हो गई है।
- बचपन में जिसने तुम्हें पाला, बुढ़ापे में उसको तुमने नहीं सम्हाला तो याद रखो ... तुम्हारे भाग्य में भड़केगी ज्वाला।
- घर में माँ को रुलाएँ और मंदिर में माँ को चुनरी ओढ़ाएँ... याद रख मंदिर की माँ तुझ पर खुश तो नहीं ... शायद खफा जरुर होगी।
- माँ-बाप को वृद्धाश्रम में रखने वाले ऐ युवक! तनिक सोच कि उन्होने तुझे अनाथाश्रम में नहीं रखा, उस भूल की सजा तो नहीं दे रहा ?
- पेट में पाँच बेटे जिसे भारी नहीं लगे थे, वह माँ बेटों के पाँच फ्लैट्स में भी भारी लग रही है। बीते जमाने का यह श्रवण का देश..... कौन मानेगा ?
- जिस मुन्ने को माँ-बाप ने बोलना सिखाया था.... वह मुन्ना बड़ा होकर माँ-बाप को मौन रहना सिखाता है।
- बँटवारे के समय घर की हर चीज पाने के लिए झगड़ा करने वाले बेटे, दो चीजों के लिए उदार बनते हैं, जिनका नाम है, माँ-बाप।
- माँ! कैसी हो ...... इतना ही पूछने से उसे मिल गया सब कुछ।
- तुमने जब धरती पर पहला श्वांस लिया, तब तेरे माता-पिता तेरे पास थे, माता-पिता अंतिम श्वांस लें, तब तुम उनके पास रहना...।

साभारोद्धृत - आर्य सङ्केत

पितरिप्रीतिमापन्ने प्रियन्ते सर्व देवताः ।।

पिता-माता के प्रसन्न होने से सारे देवता प्रसन्न रहते हैं।

वह माता शत्रु और पिता बैरी समान होता है जो बच्चों को अच्छी शिक्षा नहीं देता - चाणक्य

thearyasamaj.org

वेद के बारे में जानें ...

वेद की विशेषताएँ

- स्वामी शान्तानन्द सरस्वती
(एम.ए. दर्शनाचार्य)

१. विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ वेद है इससे पुराना और कोई भी ग्रंथ विश्व के किसी भी पुस्तकालय में उपलब्ध नहीं होता है।

२. वेदों का आविर्भाव सृष्टि के प्रारम्भ में हुआ है।

३. वेदज्ञान सृष्टि के प्रारंभ में ईश्वर द्वारा अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों को प्राणी मात्र के कल्याण के लिए दिया गया है।

४. वेद विद्या सृष्टि रचना के पूर्णतः अनुकूल है।

५. वेदों में समस्त सत्य विद्याओं का मूल विद्यमान है।

६. वेद ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल (अनुरुप) है।

७. वेद में वाक्य रचना बुद्धि पूर्वक व विज्ञान पूर्वक है।

८. वेद विद्या सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वजनीन है।

९. वेद विद्या तर्क, प्रमाण और युक्तियुक्त है तथा अकाट्य व अखंडनीय है।

१०. वेद में कही भी परस्पर विरोधाभास नहीं है।

११. वेद में पाखंड, अंधविश्वास, इतिहास (किसी राजा या मनुष्य का) नहीं है।

१२. वेद किसी एक देश विशेष की भाषा नहीं है, वेदों की भाषा वैदिक संस्कृत है जो लौकिक संस्कृत से कुछ भिन्न है।

१३. वेद सृष्टि के आदि में अर्थात् १,९६,०८,५३,११९ वर्ष पूर्व जिस प्रकार प्रकट हुए थे उसी प्रकार उसी स्वरुप में बिना किसी परिवर्तन या परिवर्धन को आज भी उपलब्ध है।

१४. दर्शन, उपनिषद्, रामायण, महाभारत, गीता, पुराण आदि धार्मिक ग्रन्थों में वेद की महत्ता बतलायी गयी है।

१५. विश्व के ८० विश्वविद्यालयों में वेद पढ़ाया जाता है।

१६. वेद स्वतः प्रमाण है, वेद को प्रमाणित करने के लिए किसी अन्य ग्रन्थ के प्रमाण की आवश्यकता नहीं है।

१७. वेदों में मनुष्य मात्र के जीवन-व्यवहार को सुखमय ढंग से चलाने के लिए आचरण करने से परम सुख मिलता है।

१८. वेद के पढ़ने-पढ़ाने, सुनने-सुनाने से धर्म होता है तथा वेदानुसार आचरण करने से परम सुख मिलता है।

१९. सम्पूर्ण वेद, धर्म का मूल है अतः कहा गयाहै, वेदोऽखिलो धर्ममूलम्।

२०. चारों वेदों की कुल ११२६ शाखाएँ हैं जिनमें से वर्तमान में १२ शाखाएँ उपलब्ध होती है।

२१. वेदों की व्याख्या करने वाले ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रंथ कहलाते हैं।

२२. वेद को श्रुति, आम्नाय, निगम, ब्रह्म आदि नाम से भी जाना जाता है।

२३. वेद पाठ के आठ प्रकार होते हैं जटा पाठ, माला पाठ, शिखा पाठ, रेखा पाठ, ध्वज पाठ, रथ पाठ और धन पाठ।

२४. चारों वेदों में कुल ७६८०० शब्द है।

२५. वेद की विशेषता बतलाते हुए महाभारत में कहा गया है कि : -

अनादि निधिना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयं भुवाः।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वा प्रवृत्तयः ॥

मशांप. २३२.५४

अर्थात् - सृष्टि के आदि में स्वयम्भू परमात्मा ने वेदरुपी ऐसी दिव्य वाणी प्रकट की है जो नित्य है तथा जिससे संसार की सारी सुप्रवृत्तियाँ चलती है।

पता - दर्शन योग महाविद्यालय, पातंजल योग आश्रम, भाखरियाँ, पो. फलोदी, जिला-जोधपुर (राजस्थान)

thearyasamaj.org

चमत्कार विभिन्न बीमारियों का ईलाज – ओ३म् ध्वनि से सम्भव

- प्रो. सत्येन्द्र शास्त्री (एम.ए. क्लासिक, बीएड), प्रवक्ता - व्याकरण

परमात्मा का प्रधान नाम ओ३म् है। ईश्वर को अनेक नाम से पुकारा जाता है। विभिन्न भाषाओं और सम्प्रदायों में उसके अनेक नाम है। इन नामों में ओ३म् को प्रधान इसलिए माना है कि प्रकृति की संचालक सूक्ष्म गतिविधियों को अपने बुद्धि योग्य बल से देखने वाले ऋषियों ने समाधि लगाकर देखा कि प्रकृति के अन्तराल में प्रशिक्षण एक ध्वनि उत्पन्न होती है जो ओ३म् शब्द से मिलती जुलती है इसलिए प्राकृतिक और ईश्वर का नाम ओ३म् रखा है। पतंजलि ने कहा कि यदि तुम ईश्वर को पुकारना चाहते हो तो ओ३म् नाम से पुकारो। यदि ओ३म् का उच्चारण विधिवत किया जाये तो प्रकृति मनुष्य के पराधीन होती जाती है। फलस्वरुप उस व्यक्ति के द्वारा नाना प्रकार के चमत्कार होने लगते हैं हम उन्हें महामानव भगवान तक की उपाधि देते है। उनकी कुण्डलिनी शक्ति का जागरण हो जाता है। एक्यूपंचर सिद्धांत के अनुसार शरीर में प्राण ऊर्जा सर्किट बर्तुलाकार घूमती रहती है जब यह ऊर्जा आहार-विहार और विचार आदि की गड़बड़ी के कारण किन्ही स्थानों में रुक जाती है और उसके गतिमान होने में रुकावट आ जाती है तो शरीर रोगी हो जाता है। ऐसे लगभग ६०० हिन्दू अथवा केन्द्र खोज निकाले गये हैं जहां ऊर्जा अवरूद्ध हो जाती है इसके विचारणार्थ एक्युपंचर एवं एक्युप्रेशर से सहमत थे। पतंजलि ने योग के द्वारा इसके निराकरण का उपाय खोज निकाला उन्होने कहा कि किसी ध्यान मुद्रा की अवस्था में जब ओ३म् का जप किया जाता है और साथ-साथ उसके अर्थ की भावना की जाती है तब जब ऊर्जा व देह ऊर्जा दोनों एक दूसरे से विपरीत घूमने के कारण आपस में रगड़कर विद्युत उत्पन्न करती है। यह विद्युत प्रवाह सारे रोगों को नष्ट करके शरीर को स्वस्थ व निरोग बनाने के बाद मस्तिष्क में प्रवेश करती है और ज्ञान कोषों को खोल देती है। दीर्घकाल के अभ्यास से साधक परम लक्ष्य तक पहुंचने में समर्थ हो जाता है ओ३म् शब्द में तीन अक्षर होते हैं अ उ म। **ओंम अक्षर का उच्चारण से ओज शक्ति की वृद्धि होती है** क्योंकि उच्चारण करते समय मूलबन्ध (गुदामार्ग को सिकोड़ना) लगता है जिससे वीर्य का उर्ध्व रेत होता रहता है। लम्बे समय के अभ्यास से मूलाधार चक्र प्रवाहित होता है। **उ अक्षर के उच्चारण से उदर शक्ति का विकास उड्डयानबंद्ध** (पेट को अंदर सिकोड़ना) के लगने से होता है। जिससे उदर पेट संबंधी रोग धीरे-धीरे स्वतः समाप्त हो जाते हैं कुछ समय के अभ्यास से मणिपूरक चक्र प्रभावित होता है। **म अक्षर के उच्चारण से मस्तिष्क की शक्तियों का विकास होता है** क्योंकि उस समय मस्तिष्क में नये विचार बाहर ही नहीं निकलते हैं बल्कि शून्य पड़े अवयव भी कार्य करने लगते हैं। फलस्वरुप मस्तिष्क भी स्मरण शक्ति अपने आप बढ़ने लगती है। म अक्षर के उच्चारण से सहस्रारचक्र प्रवाहित होता है जब मूलाधार मणिपूरक व सहस्रारचक्र ओ३म् शब्द से कई बार के उच्चारण से एक साथ प्रवाहित होती है तो कुण्डलिनी शक्ति का जागरण होता है। जिससे उपरोक्त उपलब्धियां स्वतः प्राप्त होने लगती है।

ओ३म् शब्द विधि – किसी तख्त पर या जमीन पर बिछे हुए कंबल या गद्दे पर किसी सुखासन में देर तक रीढ़ की हड्डी को सीधा रख सकें। बैठ जाये यदि जमीन पर घुटने मोड़कर न बैठ सके तो रीढ़ की हड्डी को सीधा रखकर कुर्सी पर बैठ सकते हैं पर इस बात का ध्यान रखें कि पैर कुचालक पर ही रखे इसके बाद बाएं हथेली पर दांए हथेली रखकर दोनों हाथ में गोद में रखे जिससे ऊर्जा उंगली में न निकलकर शरीर के अंदर सर्किट में घूमे। फिर आंख बंद

thearyasamaj.org

करके सांस को भरते समय एक बात का ध्यान रखें कि पेट फूले अर्थात् बाहर आये इसके बाद ओठ को खोलकर ओ अक्षर का उच्चारण करें और मन के द्वारा गुदामार्ग की मांसपेशियों को अंदर की ओर खींचते जाएंगी अर्थात् मूलबंध लगता है इसी प्रकार के उच्चारण में ओठों को कम खोलकर मन के द्वारा पेट के अंदर खींचता हुआ अनुभव करते हैं अर्थात् उड्डयानबंध लगता है अंत में म का उच्चारण करते समय ओठ को बंद कर लेते हैं मस्तिष्क में मन कोलगाकर भ्रामरी प्राणायाम की अनुभूति करते हैं यह पूरा क्रम एक श्वास में पूरा करते हैं ओ में ज्यादा समय देते हैं उसमें कम उ में सबसे कम समय देते हैं बल्कि अपनी-अपनी रूचि के अनुसार जिस शक्ति को अधिक चाहते हों उस शक्ति के अनुसार अक्षर के उच्चारण में अधिक समय देवें ।ओ३म् अव धातु से औणादिक मन प्रत्यय के संयोग से आचार्य पाणिनि के धातुपाठ पुस्तक में लिखा शब्द बनता है।

अव धातु के उन्नीस अर्थ है कान्ति, तृप्ति, रक्षण, गति, अवगम, प्रवेश, श्रवण, स्वाम्यर्थ, यांच, क्रिया इच्छा, दीप्ति, वाप्ति, आलिंगन, हिंसा, दान, भाग और वृद्धि। अउम तीन अक्षर मिलकर एक ओ३म् समुदाय पद बनता है। **तस्य वाचकः प्रणवः** (योगदर्श १/२७) उस ईश्वर का नाम ओम है। **तज्जपस्तदर्थ भावनम** (१/२८ योगदर्शन) ओम का जप करने से चित्त में एकाग्रता होती है। **ओम खं ब्रह्मः** (यजुर्वेद ४०/१७) परमात्मा आकाश के समान व्यापक और सबसे बड़ा है। ओम क्रतो स्मर (यजुर्वेद ४०/१९) ओम यह जिसका निजनाम है उस ईश्वर को याद करना। इत्यादि अनेकों प्रमाण ऋषि मुनियों ने अपने ग्रंथों में लिखे हैं।

ओ३म् शब्द लौकिक व्यवहार में लाना चाहिए। जैसे फोन पर हलो की जगह ओ३म् बोलना चाहिए। अपने मकान पर ओ३म् का झण्डा लगाना चाहिए। गाड़ी वाहनों पर ओम लिखना उत्तम है वैसे ओ३म् के अनेकों चमत्कार है कुछेक ही प्रस्तुत आलेख में वर्णित है।

-पता : शासकीय संस्कृत महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

गृहस्थ के लिए सुख-शांति के उपाय

१. नित्य प्रति प्रातः सायं ईश्वर की उपासना-ध्यान-जप-चिन्तन करना।

२. नित्य प्रति यज्ञ (हवन) का अनुष्ठान करना।

३. पति-पत्नी, सास-ससुर माता-पिता आदि की सेवा करना तथा इनका सम्मान करना।

४. घर में सात्विक अन्न पकाना पुनः उसमें थोड़ा घी मिलाकर अग्नि में दस आहुति प्रदान करना।

५. गाय-बैल, कुत्ता-बिल्ली, पक्षी आदि जीवों तथा गरीब, अनाथ, दीन हीन लोगों को अन्न आदि प्रदान करना।

६. घर में पधारे हुए विद्वान, अतिथि आदि की यथाशक्ति सेवा-सत्कार करना।

७. प्रतिदिन किन्हीं धार्मिक संस्थानों, आश्रमों, गुरुकुलों, गोशालाओं आदि के लिए अपनी पवित्र कमाई का कुछ अंश, दान हेतु बचत करना एवं प्रतिमाह भेजना।

८. अपने परिवारजनों, संबंधियों, पड़ौसियो से प्रेमपूर्वक व्यवहार करना तथा स्वयं प्रसन्नतापूर्वक रहना।

९. अपनी सन्तान को धार्मिक, परोपकारी, ईश्वरभक्त बनाने हेतु उचित शिक्षा देना व दिलाना।

१०. नित्य प्रति धार्मिक-आध्यात्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करना।

११. एक पत्निव्रत/पतिव्रता धर्म का तन-मन-वचन से पालन करना व सहनशीलता को धारण करना।

१२. अपने बच्चों व परिवार के अन्य बच्चों के साथ समानता का व्यवहार करना।

१३. सदा सत्य, मधुर एवं हितकारी बोलना।

१४. स्वयं धार्मिक-आध्यात्मिक ग्रन्थों एवं अच्छे-अच्छे साहित्यों को पढ़ सके, समझ सके इतनी विद्या प्राप्त करना।

१५. अपनी व्यक्तिगत, पारिवारिक उन्नति करने के साथ-साथ सामाजिक-राष्ट्रीय उन्नति हेतु भी प्रयत्नशील रहना।

स्वामी शान्तानन्द आर्य (दर्शनाचार्य) दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात)

thearyasamaj.org

प्रेरक था महात्मा आनन्द स्वामी का व्यक्तित्व

पुण्य स्मरण

आर्यसमाज के वरिष्ठ नेता महात्मा आनन्द स्वामी का ज़न्म १५ अक्टूबर १८८३ को हुआ था। इनके पिता मुंशी गणेशदास हिन्दू समाज की कुरीतियों से दुःखी होकर ईसाई बनने जा रहे थे पर तभी उनकी भेंट महर्षि दयानन्द सरस्वती से हो गयी। उन्होने मुंशी जी को बताया कि ये कुरीतियां सनातन हिन्दू धर्म का अंग नहीं है। देश काल परिस्थिति के कारण कुछ लोग यह समूह अज्ञानवश इन्हें अपनाते हैं। अतः ईसाई बनने के बदले उन्हें हिन्दू समाज की कुरीतियां को दूर करने का प्रयास करना चाहिए।

मुंशी जी की आंखे खुल गयी। अब वे महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के भक्त बन गये। इनके घर में एक बालक का जन्म हुआ, जिसका नाम खुशहालचन्द्र रखा गया, पर जैसे जैसे बालक बड़ा हुआ तो सबके ध्यान में आया कि यह बालक मंदबुद्धि है। यह देखकर स्वामी नित्यानन्द ने बालक को गायत्री की साधना करने को कहा। इससे खुशहालचन्द्र की बुद्धि जाग्रत हो गयी और उसका जीवन बदल गया।

कुछ समय बाद खुशहालचन्द्र का विवाह और एक संतान हुई। अब मुंशी जी उसे व्यापार में लगाना चाहते थे, पर उसका मन तो अब पढ़ने-लिखने में ही अधिक लगता था। एक आर्यसमाज जलालपुर के वार्षिकोत्सव में महात्मा हंसराज जी आये। खुशहाल ने उनके भाषण की रिपोर्ट बनाकर उन्हें दिखाई, तो वहे बहुत प्रसन्न हुए। उन्होने खुशहालचन्द्र को लाहौर आने को कहा।

लाहौर में हंसराजजी ने खुशहाल को आर्य गजट के सम्पादक श्री रामप्रसाद जी के पास लेखन कला के अभ्यास को भेजा, पर रामप्रसाद जी ने उन्हें लेखा विभाग में लगा दिया। उन्हें ३० रुपये वेतन मिलता था, जिसमें से काफी धन कार्यालय के हिसाब की पूर्ति में लग जाता था। शेष से उनके पेट ही नहीं भरता था। जब हंसराज जी को यह पता लगा तो उन्होने खुशहाल को आर्य गजट का सह सम्पादक बनवा दिया। अब तो वे दिन रात काम में लगे रहते थे। इससे उनका स्वास्थ्य बिगड़ गया। यह देखकर उनकी पत्नी मेलादेवी भी लाहौर आ गयी। अब खर्च और बढ़ गया, जबकि आय सीमित थी।

एक बार मेलादेवी ने अपने मायके से १५ रुपये मांग लिये। जब खुशहाल जी को पता लगा तो उन्होने कहा कि पैसे तो मैं भी मंगा सकता था, पर इससे मेरी तपस्या भंग हो जाती। इसके बाद मेलादेवी ने घोर कष्टों में भी ससुराल या मायके से पैसे मंगाने की बात नहीं की। जब दैनिक मिलाप का प्रकाश शुरु हुआ, तो खुशहालचन्द को उनसके काम में लगा दिया।

एक बार घी समाप्त होने पर मेलादेवी ने अपने पुत्र को उनके पास भेजा। तभी खुशहाल जी को मिलाप के लिए अनेक धनादेश मिले थे, पर उन्होने उसे घी के लिए खर्च करने से मना कर दिया। संन्यास के बाद उनका नाम आनन्द स्वामी हो गया। दिल्ली आने पर वे अपने पुत्र के घर न जाकर आर्यसमाज भवन में ही ठहरते थे। एक बार बेटा उन्हें लेने आया, तो वे किसी के घर से मांगी हुई रोटी खा रहे हैं। बेटे के नाराज होने पर उन्होने स्पष्ट कहा कि संन्यासी की भिक्षावृत्ति से ही पेट भरना चाहिए।

विरक्त महात्मा आनन्द स्वामी का जीवन उस प्रकाश स्तंभ की भांति है, जिसके प्रकाश में हम कभी भी अपने जीवन का मार्ग निर्धारित कर सकते हैं।

- इन्टरनेट से संकलित

thearyasamaj.org

कविता धैर्य

अंधेरी गली में नदी के किनारे,
सिसकती किसी की चिता जल रहीथी
सिसकती रही फिर भी जलती रही
उम्मीदों का दामन न छोड़े न छुटे
जलती जा रही थी चलती जा रही थी
अधिक प्यारा मंजिल न था प्यार खुद से
संघर्ष वही और कहानी वही थी
दूध की दांतों से पर्वत को तोड़ने
मन में उसकी हिम्मत क्यों जुटी थी
अकेली थी वो और चली जा रही थी
खींच दे लकीर पत्थर पे वो रस्सी दिखी थी
आखिर वो मंजिल नजदीक था ही
पगडंडी सी अब तो दिशा मिल गई थी
संकट में उसने न हारी थी हिम्मत
इसकी उसे खुशी मिल रही थी
क्योंकि संकट की अब तो कदम हिल रही थी।

रचयिता : प्रभात कुमार, मो. ८९२४३९२७९

गीतिका

जो भी चाहे सजा दे हमें,
दोष लेकिन बता दे हमें
कर न पाये जो करना तुम्हें
आज करके दिखा दे हमें
आप कहकर विदा लीजिये
नींद आये, जगा दें हमें
याद करते रहे आपको
आप चाहें, भूला दें हमें
आपकी बहु प्रशंसा सुनी
आप क्या हैं ? बता दें हमें
आप लेकर चले साथ में
चाहे गड्ढे में डुबा दें हमें
प्यार हमको हुआ आपसे
आपको भी ? बता दें हमें
आप किसके लिये हैं बने
मात्र इतना बता दें हमें
पार जाने का मन ही नहीं
दूर से तट दिखा दें हमें

रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र', डी-४, उदय हाउसिंग सोसा. बेजलपुर, अहमदाबाद-३८००१५

कलि माहात्म्य

निर्वीर्या पृथिवी निरोषधिरसा नीचा महत्वंगता,
भूपाला निज कर्मधर्मरहिताः विप्राः कुमार्गे रताः
भार्याभर्तृविरोधिनी पररताः पुत्राः पितुर्द्वेषिणो (माघ)
हा कष्टं खलु वर्त्तते कलियुगे धन्या नरा ये गताः ॥

भावार्थ :- पृथ्वी सम्प्रति निर्वीर्य हो चली है। पराक्रम उठ गया है। ओषधियां रस विहीन (गुणविहीन) हो गई। छोटे लोग बड़े-बड़े महत्व के पदों पर पहुंच रहे हैं। राजाओं के राज्य चले गए, वे अपने कर्मों, धर्मों से पृथक् हो चले हैं। पत्नी पति से द्वेष करने लग गई है और अन्य पुरूषों में प्रेमासक्त है। पुत्र पिता के शत्रु बन गए हैं। हा... बहुत ही कष्ट है कि - यह कलियुग आ गया है, कलियुग। धन्य हैं वे पुरूष जो अपने जीवन की सांध्यवेला पूर्ण कर इस संसार से चले गए हैं। धन्य हैं।

- सुभाषित सौरभ

thearyasamaj.org

पुण्य स्मरण

देवतास्वरूप भाई परमानन्द

५ नवम्बर जयन्ती

भाई परमानन्द इस युग की एक महान् विभूति थे। वे भारत माता के एक यशस्वी सपूत थे। वे मृत्युञ्जय थे। वे एक अमर बलिदानी थे। वे एक दार्शनिक और क्रांतिदर्शी थे। वे सत्यनिष्ठ थे। सत्य के लिए बड़े-से बड़ा बलिदान दिया। वे सिद्धान्तो का सौदा न कर सकते थे। वे किसी तात्कालिक लाभ के लिए सचाई को बेचना या स्वयं बिकना नहीं जानते थे। उन्होने देशहित में, परहित में कौन-सा कष्ट है जो नहीं झेला ! देश-जाति के लिए सब करणीय कार्य किए, परंतु - काम थे निष्काम क्या बदले में पाया ? वे मानवता का मान थे। एक ऊँचे समाज-सुधारक थे। लोग जातिभेद-निवारण की बातें-ही-बातें करते हैं। भाईजी ने अपने व्यवहार से जाति-पांति की बंधन-कड़ियां आज से साठ वर्ष पूर्व तोड़कर दिखाई। वे महर्षि दयानन्द की शिष्य परम्परा के आदर्श तपस्वी सन्त थे। उन्होने अपनी मान्यताओं के लिए तिरस्कार पाया। अपमान का विषपान करते रहे। देशवासियों ने उनकी हितकर सीख न सुनी परन्तु वे अपनी डगर पर चलते रहे और अपनी कहते-सुनाते रहे। देश उनकी सुन लेता तो मातृभूमि के टुकड़े न होते। ये दुर्दिन न देखने पड़ते। भाईजी की धुन को हम आचार्य चमूपति जी की पंक्तियों में ऐसे कहेंगे -

कहती है, कहे बुरा दुनिया, इस कुलटा को पतियाना क्या ?
जब प्रेम-गली में पाँव भरा, तब अपयश से घबराना क्या ?
मत चेत, हृदय हो मस्ताना- चेता तो फिर मस्ताना क्या ?
रह अपनी धुन में मस्त, न सुन है कहता तुझे जमाना क्या ?

भाई जी की कोटि का विचारक, सुधारक, तपस्वी, बलिदानी, शिक्षाशास्त्री व लेखक पश्चिम के किसी देश में जन्म लेता तो उन पर पचासों ग्रन्थ लिखे जाते। यहाँ-वहाँ उनकी प्रतिमाएँ स्थापित होतीं। उनके नाम पर कई नगर व ग्राम बसते, परन्तु इस देश ने उनको नहीं पहचाना। भाई जी का जीवन बड़ा महत्वपूर्ण है। - राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

thearyasamaj.org

१५ नवम्बर जयंती

स्वामी दर्शनानन्द

डॉ. अशोक आर्य (मण्डी डबवाली), आर्य कुटीर, ११६, मित्र विहार, १२५१०४, हरियाणा

आर्य समाज के महान् दार्शनिक स्वामी दर्शनानन्द जी का जन्म कुलीन ब्राह्मण रामप्रताप निवासी जगराओं जिला लुधियाणा, पंजाब के यहाँ माघ कृष्ण १० सं. १९१८ वि. (इस वर्ष १५ नवम्बर जन्म दिन) को हुआ। आरंभिक नाम नेतराम को बदल कर कृपाराम रखा गया। फारसी व संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की तथा ११ वर्ष की आयु में विवाह हो गया। वैराग्य वृत्ति वाले कृपाराम ने पिता के व्यापार को सम्भालने में कुछ भी रुचि न ली। घूमते हुए अमृतसर में महर्षि के विचार सुन नवीन वेदान्ती कृपाराम पर दयानन्द का रंग चढ़ गया। आपने महर्षि के ३७ व्याख्यान सुने तथा इतने वर्ष ही आर्य समाज की सेवा का गौरव भी पाया। काशी जाकर दर्शनों का विस्तृत अध्ययन किया तथा जो पैसा वह लेकर गए थे, उससे काशी में "तिमिर नाशक यन्त्रालय" स्थापित किया। यहां से व्याकरण व अनेक आर्ष ग्रन्थ छापकर विद्यार्थियों को सस्ते दामों में दिये। इससे छात्र मण्डली में अच्छी प्रसिद्धि मिली। १९९३-९४ में पंजाब तथा १८९९-१९०० में आगरा में प्रचार किया तथा लघु प्रचार पुस्तकें लिखना, व्याख्यान देना व शास्त्रार्थ आपके दैनिक कर्म बन गए। आगरा में ही पं. भीमसेन शर्मा से शास्त्रार्थ हुआ तथा अगले वर्ष ही गंगातट के राजघाट स्थान पर स्वामी अनुभवानन्द से संन्यास लेकर दर्शनानन्द स्वामी के नाम से प्रचार में जुट गए।

आर्य समाज के शास्त्रार्थियों में आप का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी मतानुयायियों से अनेक शास्त्रार्थ किये। इस क्षेत्र में आपने अपनों को भी नहीं छोड़ा तथा वृक्षों में जीव विषय पर पं. गणपति शर्मा जी से भी उलझ पड़े, जो कि आर्यसमाज के सम्मानित प्रवक्ता थे। आपने प्रचार में पत्र व पत्रिकाओं के महत्व को खूब पहचाना। अतः आपने एक के बाद एक कुल एक दर्जन के लगभग उर्दू व हिन्दी पत्रिकाओं का सम्पादन किया। आपके प्रचार काल में आपके प्रचार क्षेत्र की भाषा उर्दू होने के कारण आपका अधिकांश लेखन व अधिकांश पत्रिकाएं उर्दू में ही रहीं। यह सब करते हुए भी आपने गुरुकुलों की वृद्धि में अपना पूरा ध्यान दिया। आप गुरुकुल शिक्षा के महत्व को अच्छी प्रकार समझते थे। आप नेतागिरी पसन्द न करते "काम करो व भूल जाओ" की भावना आपमें अति बलवती थी। इसीके मध्य दृष्टि आपकी सदा यही नीति रही कि आपने मेहनत करके गुरुकुलों की स्थापना की, अच्छी प्रकार व्यवस्थित होने के पश्चात् इन्हें सुयोग्य हाथों में सौंप दिया। आपने सिकन्दराबाद से रावलपिंडी तक अनेक गुरुकुलों की स्थापना की। वर्तमान गुरुकुल ज्वालापुर भी आपके प्रताप का ही गुणगान कर रहा है। जहां तक लेखिनी का प्रश्न है. इस क्षेत्र में भी आपकी देन अभूतपूर्व ही रही है। आपने जितनी मात्रा में तथा जितना गुणों से युक्त साहित्य विरासत में दिया, इतना बहुत कम आर्य महापुरुष ही लिख पाए हैं। आपके लेखन के विषय में यह प्रसिद्ध है कि आप प्रतिदिन किसी गहन प्रचारात्मक विषय पर एक लघु पुस्तक लिखा करते थे। इनकी निश्चित संख्या बताना अनुमान से परे हैं। दर्शनों पर आपके तार्किक भाष्य तथा छः उपनिषदों पर अत्यन्त सरल व्याख्या देकर इसे आपने सर्व सुलभ बना दिया। मनु स्मृति व गीता की टीका भी आपकी लेखनी के दर्शन कराती है। भारी संख्या में अन्य मतों की समीक्षा में भी अनेक पुस्तकें लिखीं। आप न केवल नियमित देशाटन करते रहे अपितु लेखन, प्रचार व शास्त्रार्थों में भी आपने कभी विराम न आने दिया। परिणामस्वरुप स्वास्थ्य में गिरावट आना स्वाभाविक ही था। अतः हाथरस अस्पताल में चिकित्सा के मध्य आपका देहान्त ११मई को हो गया। आपके निधन से एक महान् शास्त्रार्थ महारथी, अद्वितीय प्रचारक, अभूतपूर्व वैदिक लेखक, गुरुकुलों की संख्या बढ़ाने वाला यह सितारा ऐसा विदा हुआ कि इस क्षति को पूरा कर पाना हमारे लिए असम्भव हो गया। यदि उनके जीवन से कुछ प्रेरणा लेकर हम भी स्वाध्याय व प्रचार को बढ़ा सकें तो यह उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ●

thearyasamaj.org

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग में तीन दिवसीय सामवेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दुर्ग । आर्यसमाज मठपारा दुर्ग एवं आर्य शिक्षा समिति दुर्ग-भिलाई के संयुक्त तत्वावधान में सामवेद पारायण महायज्ञ व आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव वैदिक पद्धति व वेदप्रचार के साथ सम्पन्न हुआ। वार्षिकोत्सव महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय गयानगर दुर्ग के विशाल प्रांगण में दिनांक १०-१०-२०१४ से १२-१०-२०१४ तक आचार्य अंशुदेव आर्य (प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा) द्वारा ओ३म् ध्वज फहराया गया, उसके बाद आचार्य जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण महायज्ञ प्रारंभ हुआ।

इस महायज्ञ में आचार्य लोकनाथ शास्त्री एवं गुरुकुल आश्रम आमसेना के ब्रह्मचारियों द्वारा वेदपाठ किया गया। तीन दिनों तक लगातार सस्वर पाठ के साथ स्वाहा-स्वाहा उच्चारण धरती आसमान गुंज उठा। यज्ञोपरान्त प्रतिदिन प्रातः, सायं इन विद्वानों का भजन व प्रवचन हुआ। नागपुर से पधारे पं. सुरेन्द्रपाल आर्य, गुरुकुल हरिपुर उड़ीसा से पधारे डॉ. सुदर्शनदेव आर्य, गुरुकुल आमसेना से डॉ. कुञ्जदेव मनीषी ग्राम बघेरा से पं. सेवकराम, ग्राम कुर्रा से शंकरलाल आर्य मुख्य रुप से उपस्थित रहे।

यह कार्यक्रम निरन्तर चलते हुए दिनांक १२-१०-२०१४ को यज्ञ की पूर्णाहुति हुई। इस अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालुओं ने आहुतियाँ प्रदान की। उसके पश्चात् विद्वानों का स्वागत व सम्मान किया गया। बाद में भजन, प्रवचन व शांतिपाठ, जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ऋषिलंगर का आयोजन किया गया, जिसमें ५०० से अधिक भक्तों ने ऋषि प्रसाद ग्रहण किया।

इस अवसर पर सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, आर्य शिक्षा समिति के अध्यक्ष श्री हरीश बंसल का उद्बोधन हुआ। इस वार्षिकोत्सव में वरिष्ठ आर्यसमाज श्री मोहनलाल चड्ढा, श्री सतीष बख्शी, डॉ. राजकुमार शास्त्री, श्री जी.एस. ठाकुर, श्री दिलीप आर्य तथा आर्यसमाज कोहका भिलाई, आर्यसमाज सेक्टर-६ व अन्य आर्यसमाज के पदाधिकारी व सदस्यगण, श्री सुरेन्द्र गुप्ता, आचार्य उद्धव शास्त्री, माता झिंझुलवाडिया अन्य श्रद्धालुगण, भक्तजन व गणमान्य नागरिक उपस्थित रहे।

इस पुनीत कार्यक्रम में डी.ए.व्ही. मॉडल कालेज, डी.ए.व्ही. मॉडल स्कूल आर्यनगर, महर्षि दयानन्द आर्य उ.मा. विद्यालय मठपारा, गयानगर, व कोहका विद्यालय के प्राचार्य एवं शिक्षक-शिक्षिकाओं का सराहनीय योगदान रहा। यज्ञ के मुख्य यजमान श्री के.एल. चौधरी सपत्निक रहे।

संवाददाता : संतोष शर्मा, सचिव आर्य शिक्षा समिति

युवा चरित्र निर्माण एवं आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न

आमसेना। वैदिक धर्म की रक्षा में अहर्निश सेवारत गुरुकुल आश्रम आमसेना के प्रांगण में दि. ७ अक्टूबर २०१४ को विजयादशमी के अवसर पर युवा चरित्र निर्माण एवं आर्य वीर प्रशिक्षण शिविर सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस शिविर का शुभारम्भ २ अक्टूबर १४ को नुआपाड़ा जिले के यशस्वी विधायक श्री बसंतभाई पण्डा के करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन द्वारा हुआ। इस शिविर में छत्तीसगढ़, ओड़िसा से २०० आर्यवीरों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

शिविर में गुरुकुल आश्रम आमसेना के आचार्य व्रतानन्द जी सरस्वती, उपाचार्य डॉ. कुञ्जदेव मनीषी, वा. विशिकेशन शास्त्री, आचार्य रणजीत विवित्सु, आ. मनुदेव वाग्मी तथा विश्वामित्र जी का भी विशेष सहयोग रहा।

समापन समारोह ७ अक्टूबर १४ को गुरुकुल आश्रम आमसेना के संस्थापक एवं संचालक स्वामी धर्मानन्द जी के अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर श्री शरच्चन्द्र जी, श्री राजूभाई धोलकिया, सीआरपीएफ कमाण्डर श्री प्रधान जी, श्री सुरेश अग्रवाल जी, डॉ. केवलचन्द्र जी साहू आदि अनेक आर्यसज्जनों की उपस्थिति थी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. कुञ्जदेव मनीषी तथा आनन्द कुमार शास्त्री ने किया।

संवाददाता : डॉ. कुञ्जदेव मनीषी, संचालक, उ.प्रा. आ.वी.

thearyasamaj.org

इस प्रकार यह कार्यक्रम अपने उद्देश्य के अनुरुप समय पर अच्छी प्रकार से सोल्लास सम्पन्न हुआ।

संवाददाता : आचार्य रणवीर आर्य, कांसा

आर्यसमाज कांसा में "आर्य परिवार मिलन समारोह" सोल्लास सम्पन्न

कांसा (जांजगीर चांपा)। आर्यसमाज कांसा द्वारा पिछले ७-८ वर्षों से सामूहिक भ्रमण का कार्यक्रम किया जाता है, जिसमें अभी तक गुजरात, राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तरांचल, दिल्ली, उड़ीसा आदि अनेक स्थानों के अनेक दर्शनीय स्थलों को देखने के साथ-साथ वहां के आर्यसमाज के संस्थाओं, गुरुकुलों तथा आश्रमों में भी गये। वहां जकर माननीय आचार्यों एवं संन्यासी महानुभावों का सदुपदेश भी सुनने का सौभाग्य मिला। जिससे सभी यात्राओं में लोग आनन्दित उत्साहित तथा आर्यसमाज से बहुत प्रभावित होकर आये।

इन्हीं यात्राओं में गये यात्रियों की हार्दिक इच्छा थी कि सब लोग किसी एक जगह पर मिलें, मिलकर परस्पर परिचय करें तथा यात्रा का अनुभव बांटे। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु आर्यसमाज कांसा में दिनांक २ अक्टूबर २०१४ (गुरुवार) को आर्यपरिवार मिलन समारोह का कार्यक्रम किया गया। यंह कार्यक्रम केवल एक दिन के लिए प्रातः ८.३० बजे से सायं ४.३० बजे तक हुआ। इस कार्यक्रम में लगभग १२५ आर्य महानुभावों ने भाग लिया। जिसमें से कुछेक लोगों ने अपना सुखद अनुभव सुनाया तथा इस कार्यक्रम में पधारे मुख्य अतिथि आजार्य जयदेव जी (बिलासपुर) का सुन्दर उपदेश सुनने को मिला साथ में आदरणीय आचार्य सुरेश जी एवं श्री वल्लभ प्रसाद जी का मधुर भजन सुनने को भी मिला।

पत्थलगांव में नशाबंदी के लिए आर्य महिलाओं ने निकाली रैली

पत्थलगांव। दिनांक १ अक्टूबर २०१४ आर्यसमाज पंगसुवा में सैकड़ों महिलाओं ने नशाबंदी का संकल्प लेकर रैली निकाली। नशाबंदी के प्रति जागरुकता लाने निकाले गए इस रैली में लोगों को नशे के दुष्प्रभाव से अवगत कराते हुए महिलाओं द्वारा नशा नहीं करने की अपील की गई। वे प्रतिमाह रैली निकालकर नशे से होने वाले दुष्प्रभाव बताकर लोगों को नशाबंदी के प्रति जागरुक करेंगे।

रैली में शामिल महिलाओं का कहना था कि वर्तमान में बुजुर्ग समेत युवा वर्ग नशे की चपेट में हैं। नशे के कारण जहां स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है, वहीं लोगों की आर्थिक स्थिति भी खराब हो रही है।

शासन के द्वारा दिये जा रहे आदिवासियों को छूट पर भी महिलाओं ने नाराजगी जताई और कहा कि इसका दुष्प्रभाव देखने को मिल रहा है। रैली के बाद गांव में सभा का भी आयोजन किया गया, जिसमें संबोधित करते हुए श्री रामकिशोर गुप्ता ने नशे से होने वाले दुष्प्रभाव से ग्रामीणों को अवगत कराया।

यह रैली छ.ग. समग्र विकास योजना समिति के तत्वावधान में आयोजित किया गया था।

संवाददाता : श्री रामकिशोर गुप्ता, पत्थलगांव

सभा कार्यालय में महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस मनाया गया

दुर्ग। विगत दि. २२ अक्टूबर १४ को प्रातःकाल छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय दुर्ग में स्थित विशाल सभागार में दीपावली एवं महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस के पावन अवसर पर नवसस्येष्टि यज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें सभा के समस्त कर्मचारीगण बड़ी श्रद्धा एवं भक्ति भावना से हिस्सा लिए। सभा उपमंत्री श्री रवि आर्य एवं कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य ने इस कार्यक्रम में सम्मिलित होकर उपस्थित जनसमूह को बधाई दी एवं मिष्ठान वितरण किया। इस प्रकार उल्लासमय वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - निज संवाददाता

thearyasamaj.org

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) । उधमपुर जम्मू कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक १४ से २१ सितम्बर २०१४ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया।

प्रातःकाल श्रीरामभिक्षु एवं आश्रम के मंत्री डॉ. सुरेश जी साधकों को योगासन एवं प्राणायाम आदि का अभ्यास कराते थे और फिर उसके बाद पूज्य महात्मा जी क्रियात्मक योगाभ्यास करवाते थे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ भी हुआ। आचार्य संदीप आर्य जी योगदर्शन का अध्ययन करवाते थे और साधकों की शंकाओं का समाधान भी करते थे। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी ने भी श्रोताओं को अपने प्रभावशाली प्रवचनों द्वारा उपकृत किया। उनके वैदिक-सन्ध्या पर किए गए प्रवचन श्रोताओं को अत्यधिक हृदयाग्रही लगे। माँ सत्यप्रियायति, माता आनन्दायति और श्रीमती चंचल तथा अन्य शिविरार्थियों के समय-समय पर भजन होते रहे।

आश्रम के प्रधान श्री भारतभूषण आनन्द, कार्यकारी प्रधान श्री विजय भगोतरा, महामंत्री श्री यादवेन्द्र शर्मा, माता रामप्यारी और श्रीमती सुदेश आदि अन्य महानुभावों के सहयोग से शिविर बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

संवाददाता - भारतभूषण आनन्द प्रधान

श्रद्धांजलि

जबलपुर। आर्यसमाज गोरखपुर जबलपुर मध्यप्रदेश के जाने माने वरिष्ठ सक्रिय कार्यकर्ता एवं भारतीय स्टेट बैंक से शाखा प्रबंधक पद से सेवानिवृत्त श्री विजयसिंह गायकवाड़ जी का दिनांक २१-९-२०१४ को ७३ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया, वे एक अरसे से आर्यसमाज गोरखपुर (जबलपुर) के कोषाध्यक्ष थे और आर्य प्रतिनिधि सभा म.प्र. व विदर्भ के उपमंत्री रह चुके थे। आपने एक आदर्श एवं अनुकरणीय कार्यकर्ता के रुप में कार्य किया।

श्री विजयसिंह गायकवाड़ जी अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं, उनके अग्रज श्री जयसिंह गायकवाड़ जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के अन्तरंग सदस्य है, उनकी पत्नी श्रीमती मीरा गायकवाड़ महिला आर्यसमाज गोरखपुर (जबलपुर) की उपप्रधान एवं पुत्र अजय और अनूप एवं पुत्री अदिति आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्ता है। स्मरणीय है कि श्री विजयसिंह गायकवाड़ जी दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री, श्री गजानन शास्त्री, डॉ. प्रताप काले एवं गुरुकुल कांगड़ी वि.वि. में कार्यरत डॉ. दीनदयाल विद्यालंकार के चाचा ससुर थे।

अंत्येष्टि में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डॉ. ब्रह्ममुनि जी सम्मिलित हुए। श्रद्धांजलि सभा दिनांक २४-९-१४ को सम्पन्न हुई, जिसमें जबलपुर के गणमान्य नागरिकों ने उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को स्मरण करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की और शोकाकुल परिवार को सांत्वना प्रदान की।

इंटरनेट द्वारा संकलित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के निर्देशन में

१०वाँ आर्य वैवाहिक परिचय सम्मेलन

२३ नवम्बर २०१४, आर्यसमाज, स्टेशन रोड, आणंद (गुजरात) में

सम्पर्क करें : अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक, मो. ०९४१४१८७४२८

thearyasamaj.org

आर्य जगत् के योगनिष्ठ संन्यासी, वैदिक विद्वान्, समर्पित व सरल व्यक्तित्व
पूज्य स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी के ७५वें जन्मोत्सव पर
राष्ट्रीय स्तर पर भारत की राजधानी दिल्ली में

अमृत महोत्सव एवं अभिनन्दन समारोह

रविवार १६ नवम्बर, २०१४, प्रातः १० से २ बजे तक

स्थान : योग निकेतन, रोड नं. ७८, पश्चिमी पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

आर्यसमाज के समस्त संन्यासी, विद्वान, नेता एवं पदाधिकारी इस अवसर पर स्वामी दिव्यानन्द जी को शुभकामनयें प्रदान करें तथा यथेष्ट सम्मान राशि, शॉल, श्रीफल एवं सम्मान पत्र भेंट कर उनका सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे।

अपील :- स्वामी दिव्यानन्द जी को सम्मान स्वरुप इस अवसर पर एक थैली भेंट की जायेगी, जिसके लिए आप अपना सहयोग क्रास चैक/ड्राफ्ट द्वारा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति के नाम से निम्न पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप सपरिवार सादर आमंत्रित है। इस अवसर पर स्वामी जी के सम्मान में अभिनन्दन-ग्रंथ भी भेंट किया जाना है, जिसका सम्पादन डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण कर रहे हैं। स्वामी जी से परिचित महानुभावों से अपील है कि उनके बारे में अपने बारे में अपने संस्मरणात्मक लेख अथवा कविता अभिनन्दन ग्रन्थ में प्रकाशनार्थ यथाशीघ्र भेजें। वेद, महर्षि दयानन्द, आर्यसमाज, यज्ञ, योग के सम्बन्ध में रचनाएं सादर आमंत्रित है। कृपया अपनी रचना निम्न पते पर भेजें।

पता : **डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण,** सम्पादक स्वामी डॉ. दिव्यानन्द अभिनन्दन ग्रंथ, स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती अभिनन्दन समिति, **मुख्यालय : पातंजल योगधाम,** आर्यनगर, ज्वालापुर, हरिद्वार - २४९४०७ (उत्तराखण्ड)।
शाखा कार्यालय : महर्षि दयानन्द भवन, ३/५ आसफ अली रोड, नई दिल्ली-२, दूरभाष : ०११-२३२७४७७१, २३२६०९८५,
ई-मेल : **sarvadeshik@gmail.com, aryayouth@gmail.com**

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं।**

अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।

- दीनानाथ वर्मा, मंत्री मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

thearyasamaj.org

आर्यसमाज मठपारा दुर्ग में सम्पन्न सामवेद पारायण महायज्ञ एवं वार्षिकोत्सव की झलकियाँ

thearyasamaj.org

नवम्बर 2014
CHH-HIN/2006/17407

(छपी सामग्री प्रिन्टेड बुक)

सेवा में,

श्रीमान्

प्रेषक :

अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका
कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर,
आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली द्वारा आयोजित **चिन्तन शिविर** में उपस्थत सार्वदेशिक सभा के पदाधिकारीगण एवं सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य

भारत INDIA POSTAGE ₹2.00

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा उषा प्रिंटर्स, मॉडल टाऊन, भिलाई से छपवाकर छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग से प्रकाशित किया गया।